Scanned 5-6
Rescanned



# ताशकौतुकपचासा



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

ॐ



# ताशकौतुकपचासा

ताश के

अनूठे खेलों का संग्रह



प्रकाशक

लहरी बुकडिपो

बनारस सिटी

१९३०

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

प्रकाशक
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी बुकडिपो
काशी

पांचवां संस्करण

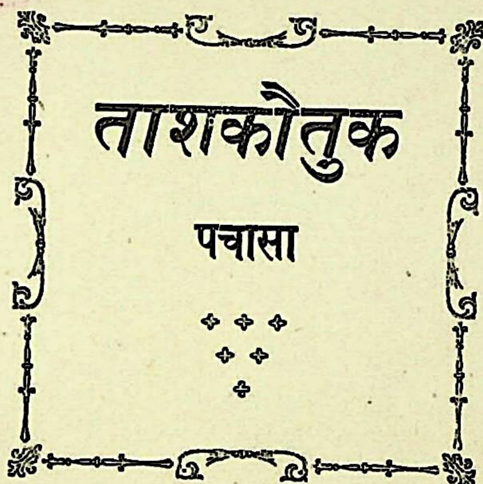


१००० प्रति

मूल्य—[redacted] 12/00

मुद्रक
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी प्रेस,
काशी

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri




CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

पढ़ने योग्य—

टार्जन

रक्तमंडल

कुसुमलता

कुसुमकुमारी

बलिवेदी पर

फूलों का हार

काजर की कोठरी

लहरी बुकडिपो

से प्राप्तव्य

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# प्रस्तावना

बड़े खेद की बात है कि हमारे भारतवासी पहिले तो किसी चतुरता और बुद्धिमानी के काम में हाथ ही नहीं डालते, और अगर डालते भी हैं तो काम को इस ढंग से करते हैं कि जिससे न तो उन्हें आनन्द आता है और न दूसरों को ही देख कर प्रसन्नता होती है।

बहुत दिनों से हमारा विचार एक ऐसी पुस्तक तैयार करने का था जिसे पढ़ लोगों की फुरती और चतुरता बढ़े और जिससे लोगों का

मनोरंजन भी हो। जिसमें दिल बहलाव की ऐसी सामग्री हो जो खेल के रूप में सर्वसाधारण को पसन्द आये। यद्यपि शतरंज अर्थात् चतुरङ्ग के खेल में जितनी बुद्धि और चतुरता लगती है उतनी और किसी खेल में नहीं लगती, तथापि शतरञ्ज एक ऐसा खेल है जो बहुत ही गंभीर और कुछ शुष्क भी कहा जा सकता है। यद्यपि उसमें बुद्धिमानी और चतुरता लगती है, पर वह इतनी अधिक मात्रा में कि वह उस खेल को मनोरंजन की सामग्री बनाने की अपेक्षा एक तरह का बोझ बना देती है, और उसके खेलने वाले उससे अपना दिलबहलाव करना तो दूर रहा एक प्रकार की चिन्ता में दब जाते हैं। ताश में यह बात नहीं है।

यहां जो खेल दिये जा रहे हैं, ये बड़े ही मनोरंजक हैं, और देखने वालों को इतने विलक्षण जान पड़ेंगे कि वे समझेंगे कि खेल दिखाने वाला कुछ जादू जानता है। पर इन खेलों का जादू से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। कौतूहलोत्पाद होने पर भी

ये केवल हाथ की सफाई, प्रवीणता और बुद्धिमानी के काम हैं। इन्हें देख बड़े बड़े होशियार आश्चर्य में आ जायंगे और उनकी समझ में आ जायगा कि साधारण मनुष्य की माया से जब लोग घबड़ा कर ताज्जुब में आ जाते हैं तो उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की असीम माया के फेर में पड़ लोगों का चक्कर में पड़ना और ताज्जुब में आना आश्चर्य नहीं है। यहां जो खेल लिखे जाते हैं वे सभी साध्य हैं, उनमें कोई भी असंभव नहीं है। आवश्यकता है केवल थोड़े अभ्यास की। अभ्यास करने से ये सभी खेल आपके लिये सरल हो जायंगे और इन्हें दिखला कर आप लोगों को ताज्जुब में डाल सकेंगे।

आप एक ही दो दफे इन खेलों को करने का उद्योग कर के यदि सफलता न पावें तो घबड़ा न जायं। धीरे धीरे अभ्यास करते जायं। आप को सफलता मिलेगी।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# ताशकौतुकपचासा

## पहिला परिच्छेद

### खेल दिखाने वाले के नियम

१–अपने पीछे, दाहिने या बायें, अत्यंत समीप किसी को बैठने या खड़ा होने न दीजिये।

२–एक खेल को बार बार न दिखलाइये।

३–खेल दिखाने के समय चुप न रहिये, कुछ कहते जाइये, जिससे देखने वालों की सावधानी में बाधा पड़े।

४–ताशों को काटने या उलट पुलट करने आदि के समय उनकी ओर न देखिये। उससे प्रायः सभों की दृष्टि उधर ही जा पड़ेगी और आप की कार्रवाई लोग जान जायंगे।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

५-खेल करने के पहिले जहां तक संभव हो पहिले से यह न बता देना चाहिये कि हम अमुक खेल करेंगे। बिना बताये ही करना आरंभ कर देना चाहिये। पहिले से कह देने से लोग अधिक सावधान हो जायंगे और संभव है आप की चतुरता समझ जायं।

६-एक ही खेल को बार बार दिखाना पड़े तो भिन्न भिन्न उपायों से उसे दिखाना चाहिये। एक ही तरकीब से बार बार दिखाने से लोग समझ जायंगे।

७-अपने खेल के ताश दूसरों के हाथ में न देना चाहिये। और यदि देना ही आवश्यक हो तो बहुत थोड़ी देर उनके हाथ में रहने देना चाहिये।

८-अच्छी तरह पहिले अभ्यास किये बिना कोई खेल दूसरों को न दिखलाइये।

९-किसी मूर्ख को अथवा किसी लड़के को ताश का कोई खेल न सिखलाइये। अपनी बेवकूफी

से वह सभी पर उस खेल को करने का भेद प्रगट कर देगा।

१०–खेल करते वक्त मौका पड़ने पर लोगों का ध्यान अपनी ओर से हटाने के लिये झूठ मूठ ही किसी मंत्र को पढ़ना चाहिये। अथवा देखने वालों से कोई गिनती या किसी फूल का नाम कहलवाना चाहिये।

११–एक छोटी सी हाथ भर की सुन्दर रंगी हुई छड़ी अपने पास रखनी चाहिये, जिसको 'मंत्र की छड़ी' के नाम से पुकारना चाहिये। किसी आश्चर्यजनक खेल को करते वक्त ताश को बीच बीच में इस छड़ी से छू देना चाहिये।

इस पुस्तक में आगे बहुत से शब्द ऐसे आवेंगे जिनका तात्पर्य अभी से समझ लेना बहुत उचित होगा, और उससे आपको खेलों के समझने में सुविधा पड़ेगी। पाठकों को उचित है कि जहां कहीं आगे लिखे हुये शब्दों का प्रयोग

हों उसका नीचे लिखा हुआ अर्थ समझें और उसी के अनुसार काम करें। यदि वे ऐसा न करेंगे तो उनके किये खेल ठीक न उतरेंगे। यह न सोचना चाहिये कि भला काटना फेंटना आदि ऐसी साधारण बातें कौन नहीं जानता। ये तो सभी को मालुम हैं। साधारण होने पर भी इनके ढंग और तरीकों में अन्तर है, और उस अन्तर और उन तरीकों को पाठकों को पहिले से समझ लेना चाहिये।


CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# दूसरा परिच्छेद

## ताशों को काटना

गड्डी में से कुछ ताशों को नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे रखने को काटना कहते हैं। खेल करने वाले को काटना इस तरकीब से चाहिये कि उससे ताशों का क्रम न बिगड़े। नीचे के कुछ ताश ऊपर और ऊपर के कुछ ताश नीचे तो अवश्य ही चले आवेंगे पर उससे समूची गड्डी का क्रम न बिगड़ेगा और उन खेलों के करने में कदापि बाधा न पड़ेगी जो यहां लिखे जायंगे।

## ताशों को फेंटना

ताशों को ऊपर या नीचे से उठा कर बीच में रखने या बीच में से निकाल के ऊपर अथवा

नीचे रखने को फेंटना कहते हैं। इसमें ताशों का क्रम बिगड़ जाता है।

### पास करना

किसी पहिचानी हुई ताश को गड्डी की सब ताशों के ऊपर लाना पास करना कहलाता है।

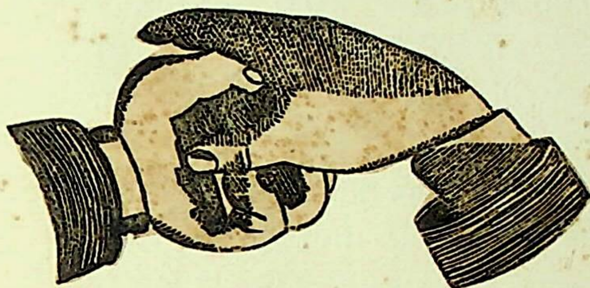
### दिखौआ फेंट

देखने वालों की दृष्टि में तो ताश फेंटी जाय। पर वस्तुतः अपनी जानी हुई ताश किसी गड़बड़ में न पड़े तो उस उलट पलट करने को दिखौआ फेंट कहते हैं।

### अंटियाना

किसी प्रकार सभों की आंख बचा कर किसी एक ताश या कई ताशों को गड्डी में से अलग कर हथेली में छिपा लेने को अंटियाना कहते हैं। इसमें खेल करने वाले को अच्छा अभ्यास होना चाहिये।

## पास करने की रीति



### चित्र नंबर १

१ ताश की गड्डी बायें हाथ की हथेली पर रख के आधे ताश दाहिने हाथ से उठा लीजिये और बायें हाथ पर जो ताश बचें उनके ऊपर पहिचाना हुआ ताश रखवा लीजिये। फिर दाहिने हाथ वाले ताशों को बायें हाथ के ताशों पर रखिये। पर यहीं पर आपको थोड़ी चतुरता करनी पड़ेगी। जिस समय बायें हाथ के ताशों पर दाहिने हाथ के ताश रखने लगिये उसी समय बायें हाथ के ताशों पर बायें ही हाथ की छोटी

[ कनिष्ठा ] उंगली रख लीजिये और फिर उस उंगली पर दाहिने हाथ के ताश रख दीजिये। इस समय बायें और दाहिने हाथ के ताशों को अलग करने वाली आपकी कनिष्ठा उंगली होगी, जैसा कि चित्र नं० १ में है। अब अत्यन्त चतुरता से दाहिने हाथ के अंगूठे और बिचली उंगली से पकड़ के बायें हाथ वाले ताशों को दाहिने हाथ वाले ताशों के ऊपर रख लीजिये। उससे आपका पहिचाना हुआ ताश सबके ऊपर आ जायगा। और फिर आप अपनी उंगली को बाहर खींच लीजिये। अब ताशों की पूरी गड्डी आपके बायें हाथ में हो गई। उसमें बीच में से ताशें निकाल निकाल के पीछे रखते जाइये जिसमें लोग समझें कि आप फेंट रहे हैं, पर असल में तो आप की पहिचानी ताश सब ताशों के ऊपर ही है। उसे आप जिस तरीके से चाहें लोगों को दिखला सकते हैं।

दिखौए फेंट की रीति

पहिले पहिचाने हुये ताश को पास करके

सब से ऊपर ले जाइये इसके बाद गड्डी को दाहिने हाथ में लेके नीचे के पांच पांच सात सात ताश बायें हाथ में रखते जाइये और इसके बाद सब से ऊपर जो आप की पहिचानी हुई ताश है उसे गड्डी में सब से नीचे रख लीजिये।

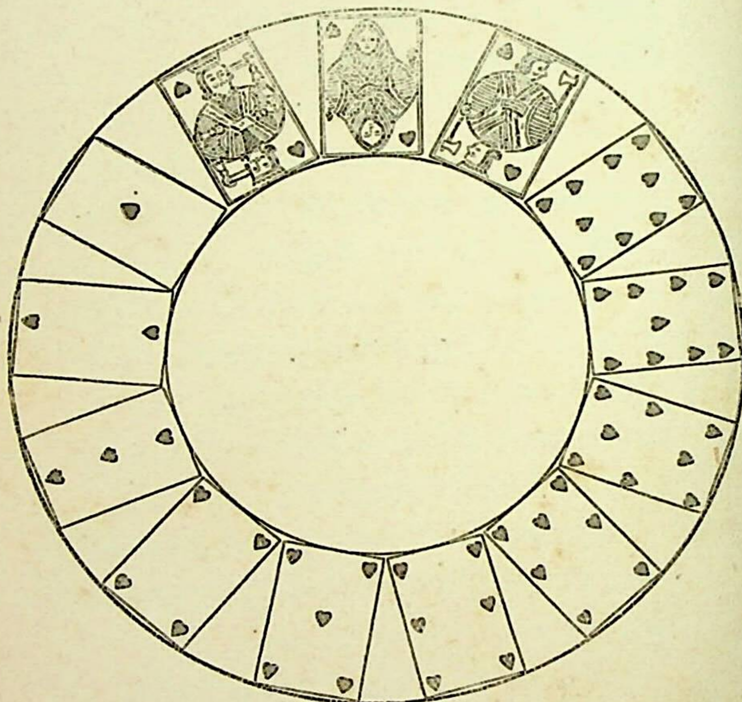
इसके बाद गड्डी को बायें हाथ में लीजिये और पहिले की तरह पांच पांच सात सात ताश दाहिने हाथ में रखते हुये अन्त की पहिचानी हुई ताश को गड्डी में सब से ऊपर रख दीजिये।

इस तरह के चार पांच बार के फेंट में यद्यपि आपकी पहिचानी हुई ताश सब से ऊपर या सब से नीचे इन्हीं दोनों जगहों में से कहीं रहेगी पर लोग यह न समझ सकेंगे और जानेंगे कि आप ने ताश को अच्छी तरह फेंट दिया है।

यहां तक खेलों को करने के कुछ साधारण नियम बता कर अब हम असल खेलों की ओर झुकते हैं।

# तीसरा परिच्छेद

चित्र नं० २



# पहिला खेल

गड्डी में से इक्के से बादशाह तक तेरह ताश निकाल लीजिये। इसमें गुलाम को ग्यारह, मेम को बारह और बादशाह को तेरह समझना चाहिये। फिर उन ताशों को औंधा करके जमीन पर गोलाकार एक के बाद एक रख दीजिये [ चित्र नं० २ देखिये ] यह आवश्यक नहीं है कि सब ताश क्रम ही से लगे हों। किसी ताश के बाद कोई ताश रक्खी जा सकती है। पर कौन ताश कहां है इस का ध्यान खेल दिखाने वाले को होना चाहिये। उत्तम होगा कि तेरहों ताशें पचीसवें खेल की पहेली के अनुसार लगाई जायं। वैसा होने से कोई कुछ सन्देह न कर सकेगा। तेरहों ताशों को जमीन पर रख कर आप मन्त्र की छड़ी हाथ में लीजिये और दर्शकों से कहिये कि आप लोग किसी गिनती का ताश मन में विचार लीजिये और मैं इस मन्त्र की छड़ी से भिन्न भिन्न ताशों पर एक

एक चोट मारता जाता हूं। आप के मन के ताश की जो गिनती हो उसके आगे से इन चोटों को गिनियेगा। जिस ताश पर मेरे चोट की इक्कीसवीं गिनती पूरी हो वही आपका विचारा हुआ ताश होगा। दर्शकों के स्वीकार करने पर आप खेल नीचे लिखे नियम के अनुसार करके दिखा दीजिये। जहां इक्कीसवीं चोट पड़ेगी वहीं दर्शकों का सोचा हुआ ताश निकलेगा। इस खेल को दो तीन बार करिये तो भी कोई हर्ज नहीं।

नियम

तेरह ताश जो जमीन पर औंधे रक्खे हुये हों उनमें यह अवश्य जानना चाहिये कि कौन ताश कहां है। फिर दर्शकों के कोई ताश मन में सोच लेने पर सात चोट तो आप जिन ताशों पर चाहें दें। आठवीं चोट तेरह पर और नवीं चोट बारह पर पड़नी चाहिये। योंहीं उतरते उतरते नीचे क्रम से चले आइये तो बीसवीं चोट एक पर

पड़ेगी। इस रीति से लोगों के विचारे हुये ताशों पर इक्कीसवीं चोट पड़ती चली जायगी।

उदाहरण

जैसे किसी ने बारह मन में लिया तो उसे तेरह से गिनना चाहिये। सात चोटें तो जहां चाहे दी जा सकती हैं। सात चोटों को बारह में जोड़ देने से उन्नीस हुआ। पहिले लिखे अनुसार बीसवीं चोट तेरह पर पड़ेगी और इक्कीसवीं चोट बारह पर पड़ेगी, जो दर्शक का विचारा हुआ ताश है। इक्कीसवीं चोट पड़ने पर दर्शक स्वयं ही कहेगा बस। वही इक्कीसवीं चोट वाली ताश उसकी सोची हुई ताश होगी। उस ताश को उठा के आप उसे दिखला दीजिये।

# दूसरा खेल

काटे हुए ताश की गड्डी में से जब कोई दर्शक थोड़े बहुत ताशों को हाथ में उठा ले तो

यह बता देना कि उठाये हुये ताश सम हैं
या विषम, अर्थात् जूस हैं या ताक

ताशों की गड्डी इस क्रम से लगी रहनी चाहिये कि एक ताश लाल हो दूसरा काला हो, तीसरा लाल हो चौथा काला हो। अर्थात् दो लाल या दो काले ताश पास ही पास न रहने चाहियें। अब जमीन पर ताशों का ढेर रखते समय आप चुपचाप देख लीजिये कि सब से नीचे का ताश लाल है या काला। मान लीजिये कि वह लाल है। जब दर्शक कुछ ताशों को गड्डी में से हाथ में उठा ले तो आप उससे यह कह के ताशों को ले लीजिये कि "हम ताशों के बोझ से देख बता देते हैं कि ये जूस हैं या ताक।" जब वह उठाये हुये ताशों को दे दे तो आप धीरे से सब से नीचे का ताश देख लीजिये। यदि वह लाल हो तो उठाये हुये ताश सम अर्थात् जूस रहेंगे और यदि वह काला हो तो वे ताश विषम अर्थात् ताक रहेंगे। आप ऐसा ही उससे

कह दीजिये। इसके विपरीत अगर गड्डी का सब से नीचे वाला ताश काला रहेगा तो उठाये हुये ताशों के नीचे काला ताश होने से वे सम अर्थात् जूस होंगे और लाल होने से ताक होंगे।

## तीसरा खेल

उनचास ताशों में से यदि किसी ने कोई ताश
मन में विचार लिया हो तो उस ताश
को बता देने की युक्ति

गड्डी में से उनचास ताश निकाल लीजिये और सात सात सीधे ताशों की सात आड़ी पंक्तियें जमीन पर बिछा जाइये। अब दर्शकों से कहिये कि उन उनचास ताशों में से किसी एक ताश को मन में याद कर लें। जब वे एक ताश मन में विचार लें तो उनसे पूछिये कि उनका ताश उन सात आड़ी पंक्तियों में से किस

पंक्ति में है। जब वे किसी पंक्ति में बतावें तो उस पंक्ति का कोई एक ताश आप मन में याद कर लीजिये।

यह आप का मन्त्र का ताश हुआ। अब आप नीचे की सातवीं पंक्ति के अन्तिम ताश से खड़ी रेखा में ताशों को उठाना आरंभ कीजिये। जब पहिली खड़ी पंक्ति के सब ताश उठ जायं तो नीचे से ही दूसरी खड़ी पंक्ति के उठाइये। यों ही जब सातों खड़ी पंक्तियां उठ जायं तो ताशों को 'काट' डालिये और तब फिर पहिले ही की तरह सात आड़ी पंक्तियां बिछा जाइये। अब जो ताश पहिले आड़ी पंक्ति में थे वे सब अब खड़ी पंक्ति में हो जायेंगे। इसके बाद दर्शकों से पूछिये कि आप का ताश अब किस पंक्ति में है। जब वे बतावें तो आप अपने मन्त्र के ताश को उनमें से खोज के मन ही मन याद कर लीजिये। और उससे खड़ी लकीर में ऊपर नीचे आंखें दौड़ाइये। जब उस आड़ी लकीर तक पहुंचिये

जिसमें कि उसने अपना ताश बताया है तो उसी ताश को उसमें से उठा के उन्हें दिखा दीजिये। वही उनका पहिचाना हुआ ताश होगा।

उदाहरण

मान लीजिये आपने उंचास ताशों को नीचे लिखे प्रकार से सजाया :—

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
| १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ |
| २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |
| २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ |
| ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ |
| ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ |

किसी ने जैसे नम्बर ४५ का ताश मन में सोच लिया। तो यह ताश ऊपर से सातवीं लाइन में आवेगा। इस लाइन का कोई एक ताश आप याद कर लीजिये। आपने मान लीजिये तैंतालिस

नम्बर याद कर लिया। अब नम्बर उन्चास से खड़ी लाइन में उठाना आरम्भ कीजिये। उन्चास से सात तक उठा के फिर अड़तालीस से छः तक उठाइये और इसी तरह सब ताश उठा डालिये। उन्हें आड़ी लकीरों में फिर सरियाइयेगा तो वे ताशें इस प्रकार हो जायंगी।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४३ |
| २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ |
| ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४५ |
| ४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४६ |
| ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४० | ४७ |
| ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४८ |
| ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ |

जब आपने फिर पूछा कि आपका ताश अब कौन लाइन में है तो निःसन्देह दर्शक तीसरी लाइन बतावेंगे। आपका मन्त्र का ताश नम्बर ४३ पहिली लाइन में है। और तीसरी लाइन में ४३

के ठीक नीचे ४५ नम्बर पड़ता है। आपने ४५ का ताश उठा के उन्हें दे दिया और कह दिया कि यही आपका ताश है। उन्चास ताशों की तरह यह खेल छत्तीस, पचीस, सोलह, नौ अथवा चार ताशों में भी हो सकता है। और आप एक एक वार में कई कई आदमियों के पहिचाने ताश वता सकते हैं। पर इसके लिये आपकी स्मरण शक्ति खूब अच्छी होनी चाहिये।

## चौथा खेल

ताशों को ऊपर से सरकाते जाना। देखने में वालों से जब कोई चाहे आपको रोक दे और तब जिस ताश पर उसने रोका उसको बता देना

ताशों का मुंह नीचे करके गड्डी अपने बायें हाथ में ले लीजिये और उसी समय लोगों की आंख बचा कर नीचे वाला ताश कौन है यह देख लीजिये। इसके वाद दाहिने हाथ की

तीन उंगलियें गड्डी के नीचे रखिये और बायें हाथ के अंगूठे से ताशों को दाहिने हाथ में सरकाते जाइये। पर इसी समय नीचे की ताश को तनिक सा उन उंगलियों से आगे बढ़ा लीजिये। जब कोई आपको रोके तो जहां तक ताश दाहिने हाथ में खसका हो चुके उनको अलग कर लीजिये और साथ में नीचे के ताश को भी खींचते लाइये। अब उन ताशों को किसी के हाथ में दे के आप बता सकते हैं कि नीचे कौन ताश है, क्योंकि वह आप पहिले ही देख चुके हैं।

# पांचवां खेल

मन में पहिचाने हुये ताश को बता देने की
विचित्र रीति

यह खेल जितने ताशों में चाहे किया जा सकता है, पर तेरह ताशों में करना ठीक होगा। तेरह ताश ले के उन्हें सीधे एक लाइन में बिछा

जाइये और दर्शकों से कहिये कि उनमें से किसी एक ताश को मन में विचार लें। पर वे इस बात को भी याद रक्खें कि वह पहिचाना हुआ ताश शुरु से गिनती में कैवां है। इसके बाद आप उस पंक्ति के पहिले ताश को याद कर लीजिये। यह आप का मन्त्र का ताश होगा। फिर उस मन्त्र के ताश की ओर से आरम्भ कर के एक एक ताश को उठा के बायें हाथ पर औंधा रखते जाइये। जब सब ताश बायें हाथ में आ जायं तो उन्हें दर्शकों में से किसी से कटवा लीजिये। और तब फिर उन औंधे ताशों की ढेरी में से नीचे से एक एक ताश निकाल के उन्हें सीधा जमीन पर बिछा डालिये। तेरहों ताशों के बिछ जाने पर दर्शकों से उस ताश की गिनती पूछिये जो पहिली लाइन में उन्होंने पहिचाना था। गिनती जान लेने पर अपने उस मन्त्र के ताश से गिन के जो ताश पड़े उसे उठा लीजिये। वही दर्शकों का पहिचाना हुआ ताश होगा।

मन्त्र के ताश से आरम्भ कर के गिनते समय यदि गिनती पूरी होने के पहिले ही पंक्ति समाप्त हो जाय तो आरम्भ के ताशों से बाकी गिनती पूरी कर लेनी चाहिये।

## छठवां खेल

उलटे रक्खे हुये ताशों में से किसी एक पहिचानी हुई ताश को बता देना

यह खेल भी जितने ताशों में चाहे किया जा सकता है। पर तेरह ताशों में करना अच्छा होगा। पहिले तेरह ताशों को स्वयं फेंट के या दूसरों से फेंटवा के उलटे जमीन पर विछा दीजिये, लेकिन किसी एक ताश पर ऐसा निशान रखिये कि आप ही उसे पहिचान सकें, दूसरा कोई न जान सके। इसके बाद ताशों में थोड़ा हेर फेर कर के मन्त्र के पहिचाने हुये ताश को सब ताशों के आरम्भ में कर दीजिये। और फिर पांचवें खेल की तरह

उठाना काटना बिछाना आदि कर के लोगों की पहिचानी हुई ताश बता दीजिये।

यदि पहिचानी हुई ताश और ताशों के आरम्भ में कोई न रखने दे तो भी यह खेल हो सकता है। पर उसमें तनिक सोच विचार से काम करना पड़ेगा।

## सातवां खेल

### ताशों की तीन ढेरी में से किसी एक ढेरी के पहिचाने हुये ताश को बताना

सात सात औंधे ताशों की तीन ढेरियें जमीन पर लगाइये, और किसी को इन तीनों में से किसी एक ढेरी में एक ताश पहिचानने दीजिये। जिस ढेरी में पहिचाना हुआ ताश हो उसे बीच में रखिये। और तब एक तरफ से एक एक करके उन ढेरियों को उठा के बायें हाथ में रखिये। पहिचाने हुये ताश की ढेरी बीच में होगी और उसके ऊपर नीचे बाकी की दो ढेरियें होंगी। जब तीनों ढेरियें

बांयें हाथ में हो जायं तो ऊपर से आरम्भ कर के एक एक ताश क्रम से तीन जगह रखिये और सब ताश एक के बाद एक उन्हीं तीनों जगह रखते हुए बायें हाथ की सब ताश समाप्त कर दीजियं। अब सात सात ताशों की तीन ढेरी पुनः हो गई। फिर पहिचाने हुये ताश वाली ढेरी बीच में रखियें और फिर हाथ में उठा के तीन जगह बिछाइयें। अब पहिचानने वाला जिस ढेरी में अपना ताश बतावे उसमें का बीच वाला अर्थात् चौथा ताश उसका होगा।

यह खेल तीन, पांच, सात, नौ, ग्यारह ताशों में भी हो सकता है। पहिचाना हुआ ताश बीच ही का होगा।

## आठवां खेल

गिरते हुये ताशों में से पहिचाने हुये ताश को बताना

ताशों की गड्डी दाहिने हाथ में ले के उसका

मुंह देखने वालों की तरफ कर दीजिये, और उसमें से दो दो तीन तीन ताश गिराते जाइये। जब कोई रोक दे तो गिराना बन्द कर दीजिये और देखने वालों से कहिये कि सामने के इस ताश को आप पहिचान लीजिये। जब कोई उस ताश को पहिचान ले तो जमीन पर गिरे ताशों को आप दाहिने हाथ के बाकी बचे ताशों पर रखना शुरु कीजिये, और रखती समय सब से ऊपर वाला ताश किसी तरह देख लीजिये। बाद में आप ताशों को तीन चार बार काट दीजिये। अब आप ताशों को सीधा करके देखियेगा तो आप के जाने हुये ताश के पीछे दर्शकों का पहिचाना हुआ ताश होगा।

यदि दिखौए फेंट की रीतिसे वह पहिचाना हुआ ताश सब ताशों के ऊपर लाया जाय और तब पीठ पीछे हाथ कर के बिना देखे निकाल के दिखा दिया जाय तो देखने वालों को बड़ा ही आश्चर्य होगा।

# नौवां खेल

## कपड़े के नीचे ढके ताशों में से पहिचाने हुये ताश को निकालना

ताशों को उलट कर किसी मोटे कपड़े के नीचे ढांक दीजिये और तब किसी को नीचे से एक ताश निकाल के पहिचान लेने दीजिये। जब वह ताश देख रहा हो आप चुपचाप कपड़े के नीचे वाले ताशों को उलट दीजिये जिसमें उनका मुंह ऊपर हो जाय। अब ताश पहिचानने वाले से कहिये कि वह अपना ताश उस ढेर के ऊपर रख दे। वह तो अपना ताश औंधा ही रक्खेगा पर बाकी सब ताश सीधे होंगे इस कारण उसका पहिचाना ताश बता देना कुछ मुश्किल न होगा।

# दसवां खेल

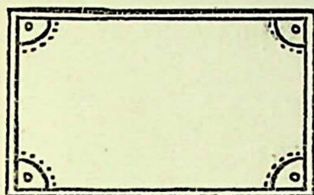
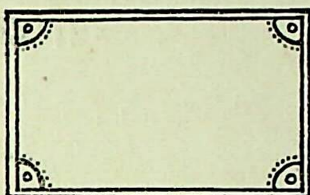
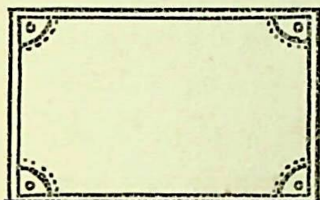
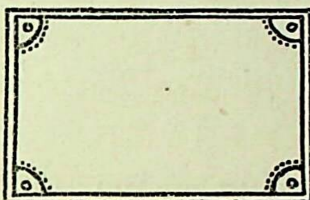
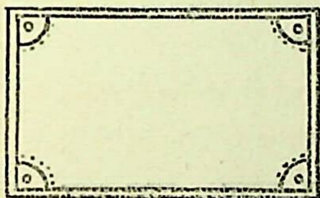
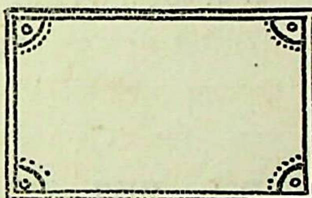
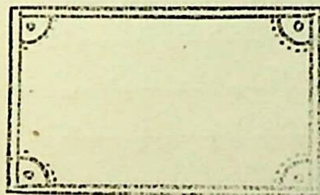
सब ताशों में से केवल पहिचाना हुआ ताश ही देखने वाले के हाथ में रह जाय। बाकी सब गिर पड़ें

ताश की गड्डी बायें हाथ में लीजिये और उसमें से एक ताश किसी को निकाल के देख लेने दीजिये। फिर दाहिने हाथ में कुछ ताशों को उठा के वह देखा हुआ ताश बायें हाथ में जो ताश बचें हों उनकी पीठ पर रखवा लीजिये फिर दाहिने हाथ के ताश उसके ऊपर रख के धीरे से पास करके वह पहिचाना हुआ ताश सब ताशों के ऊपर ले आइये। जब पहिचाना हुआ ताश गड्डी की सब ताशों के ऊपर आ जाय तो गड्डी का मुंह ऊपर कर के उसे दर्शक के हाथ में दे दीजिये और उससे कहिये कि वह उसे दाहिने हाथ के अंगूठे और पहिली दोनों उंगलियों से कोने पर पकड़ ले। जब वह उंगलियों से गड्डी को कोने

पर दबा ले तो आप अपने दाहिने हाथ की चार उंगलियों से एक हलका झटका ताश पर दीजिये। झटका ऐसा हो जो न तो बहुत हलका हो और न बहुत कड़ा। ऐसा हो कि उससे दर्शक के हाथ के सब ताश जमीन पर गिर पड़ें, उसके हाथ में सिर्फ वही ताश रह जायगा जो सब से नीचे है और जिसे वह नीचे से दोनों उंगलियों से पकड़े है।

जो ताश नीचे बच जायगा वही उसका पहिचाना हुआ ताश होगा।

यह खेल करने में बहुत ही सहज है, और देखने वालों को आश्चर्य भी खूब होगा। पर इसमें तनिक अभ्यास होना चाहिये।




( चित्र नं० ३ )

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# ग्यारहवां खेल

पहिचाने हुये ताश को देखने वाले के हाथ
से ही निकलवाना

जब कोई आदमी गड्डी में से एक ताश निकाल के उसे पहिचान ले और उसे फिर उसी गड्डी में रख दे तो आप उस ताश को पास कर के गड्डी के ऊपर ले आइये और उसे और उसके साथ और सात ताशों को जमीन में चार चार की दो लाइनों में विछाइये। पहिचाने हुये ताशों को पहिली लाइन में दूसरा रखिये।

जब आठ ताशें दो लाइनों में जमीन में विछ जायं ( चित्र नं० २ ) तो देखने वाले से पूछिये कि "क्यों साहब आप को अपना ताश याद है, आप देख के पहिचान लेगें ?" जब वह कहे कि "हां ' तो आप उससे कहिये कि "अच्छा इन आठ ताशों में आप किसी चार को छूइये।" जब वह ताशों को छू दे तो आप उन चार ताशों

को उठा लीजिये जिनमें उसका पहिचाना ताश न हो। ( चाहे इन चारों को उसने छुआ हो या नहीं। ) अब जमीन पर चार ताश रह गये। देखने वाले से इनमें से फिर दो ताशों को छूने को कहिये। जब वह छू ले तो उन दो ताशों को उठा लीजिये जिनमें उसका पहिचाना ताश न हो। अब दो ताश जमीन पर रह गये। उससे फिर एक ताश में हाथ लगाने को कहिये। अगर वह उस ताश को छू दे जो उसका पहिचाना हुआ है तो आप दूसरे ताश को उसके सामने से हटा लीजिये। और अगर वह दूसरा ताश छूए तो आप उसे उठा के पहिचाना ताश उसके हवाले करिये। वह देख के आश्चर्य में आ जायगा।

प्रायः ऐसा होता है कि आठ ताश जमीन पर बिछा के जब आप एक ताश उसे छूने को कहियेगा तो वह पहिली लाइन के दूसरे ताश को ही हाथ लगा देगा। यदि वह ऐसा करे तो आप उसी वक्त वह ताश उसने सपुर्द करके खेल खतम कर सकते हैं।

# बारहवां खेल

दस जोड़े मन में पहिचाने हुये ताशों को बता देना

दस जोड़ ताशों को एक कतार में रख जाइये और लोगों से कहिये कि जितने लोग चाहें एक एक जोड़े को मन में पहिचान लें । लोग उन्हें देख लें तो उन्हें जोड़ा जोड़ा हाथ में उठा लीजिये ।

अब आप समझिये कि आपके सामने जमीन पर नीचे लिखे अक्षर खुदे हैं :—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क | वि | ता | व | सी |
| द | रि | द्र | प | त |
| ना | म | क | रो | ना |
| गा | म | ग | प | से |

इन पंक्तियों को थोड़ा ध्यान दे के देखिये तो आप को मालूम होगा कि इन लाइनों में दो जगह "क", दो जगह "व", दो जगह "त", ऐसे ही सब अक्षर है। अपने हाथ की ताशों में से पहिली

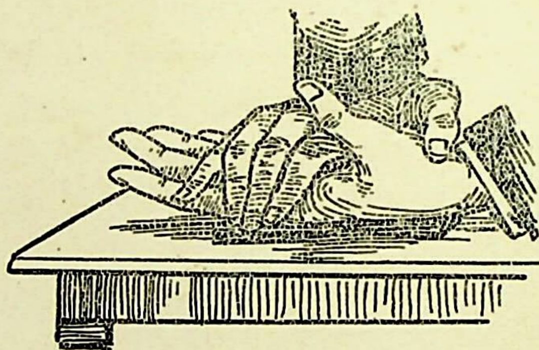
लाइन के "क" पर आप एक ताश रखिये और दूसरा ताश तीसरी लाइन के "क" पर। फिर एक ताश पहिली लाइन के "ब" पर और दूसरा उसी लाइन के दूसरे "ब" पर। यों ही बीसों ताशें बिछा जाइये। और तब देखने वालों से पूछिये कि आपके ताश कौन कौन लकीर में हैं। मान लीजिये उसने पहिली और अन्त की पंक्ति में अपना ताश बताया तो आप समझ लीजिये कि उसका ताश "स" है, अगर उसने दोनों तीसरी लाइन में बताया तो जान लीजिये कि उसका पहिचाना ताश "न" है। योंही आप सब ताशों को बता दीजिये।

## तेरहवां खेल

### हाथ के नीचे दबे हुये ताश को दर्शकों में से किसी की जेब से निकाल देना

ताशों का मुंह नीचे की तरफ करके गड्डी जमीन पर रख दीजिये और लोगों से कहिये कि

वे ऊपर वाला ताश पहिचान के उसे उसी जगह रख दें। अब आप किसी से कहिये कि वह उन ताशों को हाथ से दबावे। जब कोई ऐसा करे तो आप कहिये कि "नहीं नहीं, इस तरह नहीं, जैसे हम करें उस तरह।" तब आप अपने बायें हाथ की पीठ तो ताश की पीठ पर रखिये और फिर दाहिने हाथ से उसे दबाइये। जैसा चित्र नं० ४ में है।



आप पहिले ही से अपने बायें हाथ की पीठ पर कोई ऐसी चीज लगाये रखिये कि जिससे ऊपर वाला ताश आप के हाथ में चपक जाय। जब

आप बायां हाथ गड्डी पर रखके दाहिने हाथ से उसे दबाइयेगा तो सब से ऊपर वाला ताश आपके बायें हाथ की पीठ पर लग जायगा तब आप धीरे से हाथ को उठा लीजिये और दर्शकों से कहिये कि "देखा आपने, ऐसे ही आप भी दबाइये।" जब वह दबाने लगे तब आप धीरे से उस ताश को बायें हाथ से छुड़ा लीजिये और मौका पाकर इधर उधर किसी के जेब में डाल दीजिये।

जब वह दबाने के लिये अपना हाथ ताशों के ऊपर रखने लगे तो आप एक कपड़ा ताशों के ऊपर डाल दीजिये। जिसमें उसके बायें हाथ की पीठ पर ताश चिपक न जाय। नहीं तो वह समझ जायगा कि आपने इसी तरह ताश उठा लिया होगा। जब वह दबा चुके तो आप धीरे से कपड़े को उठा लीजिये और उससे कहिये कि "लीजिये आप अपना ताश खोज लीजिये।" कपड़ा भी उसे खोल के दिखा दीजिये जिसमें उसे कोई सन्देह न रहे। ताश तो आप पहिले ही गायब कर चुके हैं, अस्तु वह

जितना भी खोजे ताश पा नहीं सकता। इसके बाद आपने ताश जहां रक्खी हो वहां से निकाल के उसे दिखा सकते हैं। या आपने पहिले ही अगर अपने किसी मिले हुये साथी से ताश को कहीं रखवा दिया हो और फिर वहां से निकलवा के ताश को लोगों को दिखावें तो और ताज्जुब होगा।

एक सहज तरीका इस खेल को करने का और है कि पहिले ही से एक ताश उसी तरह का जिसको आप उड़ाने वाले हैं किसी दर्शक के नीचे छिपा रखिये। फिर ताश गड्डी में से गायब करके अपने पास छिपा रखिये। आपको तब कोई बखेड़ा न करना पड़ेगा।

ताश उड़ाते वक्त मन्त्र की छड़ी से ताश की गड्डी को ठोंक देना चाहिये, और निकालते वक्त जहां से ताश निकालें वहां मन्त्र की छड़ी से छू देना चाहिये।

# चौदहवां खेल

ताश की गड्डी में चारों बादशाहों को अलग अलग रख के एक ही काट में उन सब को इकट्ठा कर देना

सब के सामने गड्डी में से आप चारों बादशाहों को निकाल लीजिये, और उन चारों के साथ आंख बचा कर आप कोई दो ताशें और मिला दीजिये। लेकिन लोग देखने न पावें कि आपने बादशाहों के साथ और भी कुछ मिलाया है। अब कुल छः ताश आप के हाथ में हो गये। तीन बादशाहों को आप नीचे रखिये, उनके ऊपर उन दोनों ताशों को रखिये जिन्हें अपने छिपा के उनमें शामिल किया है, और उन पांचों के ऊपर चौथा बादशाह रखिये। फिर उन ताशों को आप इस तरह सरियाइये कि सब से नीचे वाले बादशाह के ऊपर उसके ऊपर वाला बादशाह कुछ तिरछा हो के रहे, जिसमें वह

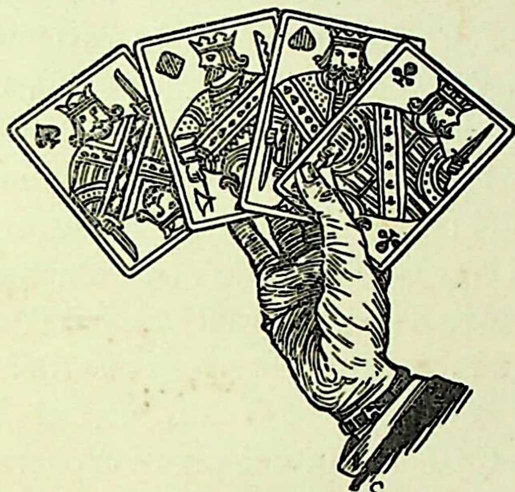


६

भी दिखे। उसके ऊपर आप तीसरा बादशाह और उसके ऊपर के दोनों ताशों को जोड़ के रखिये, लेकिन ऐसा रखिये कि वे ताशें उस बाहशाह से अलग न मालूम हों, और सामने से देखने से केवल बादशाह ही दिखाई दे, और उसके बाद, सब के ऊपर आप तिरछा करके चौथा बादशाह रख दीजिये। अब उन ताशों को आप हाथ में उठाइयेगा तो नीचे के चित्र के अनुसार दर्शकों को केवल चारो बादशाह ही दिखाई देंगे, तीसरे बादशाह के पीछे दोनों ताशें न दिखाई देंगी।

( देखिये चित्र नं० ५ )

चित्र नं० ५



उंगलियों से पकड़ के आप लोगों को दिखा दीजिये और कहिये कि चारो वादशाह हमारे हाथ में हैं। पर असल में आप के हाथ में छः ताशें होंगी। सब लोग देख चुकें तो आप ताशों को समेट के गड्डी के ऊपर औंधा करके रख दीजिये।

अब गड्डी में सब से ऊपर वाला ताश बादशाह है। उसे आप हाथ में उठाइये और लोगों को दिखा के गड्डी में सब से नीचे रख दीजिये। दूसरा ताश उठाइये जो लोगों की समझ में बादशाह होगा, पर जो असल में कोई दूसरा ताश है। उसे बिना किसी को दिखाये आप गड्डी में कहीं बीच में डाल दीजिये। तीसरा ताश भी, जो असल में बादशाह नहीं है, कहीं बीच में रख दीजिये। और चौथा ताश जो असल में बादशाह है, लोगों को उठा के दिखा दीजिये। पर फिर गड्डी के ऊपर ही रख दीजिये। अब लोगों के जानने में चारों बादशाहों में एक सब से नीचे, दो बीच में, और एक गड्डी के ऊपर हो गये। पर असल में एक बादशाह सब से नीचे और तीन सब से ऊपर है। बीच गड्डी में जो दो ताश रक्खे गये हैं वे नकली–कोई दूसरे ताश थे।

अब आप दर्शकों से कहिये कि "देखिये आप के सामने हमने चारो बादशाहों को अलग अलग कर दिया अब हम एक ही दफे काट के उन चारों

को इकट्ठा कर देते हैं।" इतना कह के जरा ताशों को इधर उधर देख भाल के, जैसे आप किसी सोच में पड़ गये हों, गड्डी को काट डालिये, चारो बादशाह इकट्ठे हो जायंगे। उन्हें दर्शकों को एक ही जगह से निकाल के दिखला दीजिये।

चारों बादशाहों को दिखाते समय ताश की गड्डी को मन्त्र की छड़ी से छू दीजिये और कोई मन्त्र झूठ मूठ पढ़ के सुना दीजिये।

## पन्द्रहवां खेल

एक आदमी के हाथ का ताश दूसरे आदमी के हाथ में चला जाय और दूसरे का ताश उसके हाथ में चला आवे

इस खेल को दिखाने के लिये गड्डी में दो हुकुम और दो पान के गुलामों की जरूरत होगी।

आप एक पान और एक हुकुम के गुलाम को बीचो बीच में से ऐसा काटिये कि उसके आधे आधे बराबर के दो टुकड़े हो जायं। अब आप

गड्डी में से पचीस तीस ताशें लेकर उनके ऊपर पान का दूसरा साबुत गुलाम रखिये और उनके ऊपर हुकुम के गुलाम का आधा टुकड़ा आगे की तरफ इस तरह बराबर करके रख दीजिये कि वह सामने से पूरी ताश जान पड़े। उसके ऊपर आप हुकुम का साबुत गुलाम जो आप के पास है रख लीजिये और उसके ऊपर पान के गुलाम का आधा टुकड़ा आगे सामने की तरफ रख के ताशों को बायें हाथ के अंगूठे और हथेली से बीचोबीच में ऐसा दबा लीजिये कि दर्शकों को यह न मालूम पड़े कि ऊपर वाली ताश बीच में से आधी है।

अब आप ताश की गड्डी को दर्शकों के सामने करके उन्हें आगे से पान के गुलाम का आधा टुकड़ा जरा सा उठा के दिखाइये और कहिये कि "लीजिये, आप लोगों में से कोई इस पान के गुलाम को इसमें से खींच के अपने कपड़े के नीचे दबा लीजिये।" जब कोई खींचने के लिये हाथ बढ़ावे तो आप गड्डी को आगे से दाहिने हाथ से

ढांक लीजिये और खींचने वाले से कहिये कि वह पीछे से ताश को खींच ले। अपनी समझ में तो वह पान का गुलाम खींचेगा, क्योंकि उसने उसी का टुकड़ा ऊपर देखा है, पर असल में उसके पास हुकुम का गुलाम जायगा। इसके बाद आप आंख बचा कर ऊपर से पान के गुलाम के आधे टुकड़े को गड्डी के नीचे डाल दीजिये, और ताशों को ऊपर से फिर उसी तरह बीचोबीच से ढांक के पकड़ लीजिये, जैसा आपने पहिले पकड़ा था।

अब गड्डी के ऊपर आगे की तरफ हुकुम के गुलाम का आधा टुकड़ा और उसके नीचे पान का साबुत गुलाम रह गया। आप दर्शकों को ऊपर से जरा सा उठा के हुकुम के गुलाम का आगे का हिस्सा दिखा दीजिये और फिर कहिये, "लीजिये साहब, अब इस हुकुम के गुलाम को आप लोगों में से कोई साहब रख लीजिये," जब खींचने वाला हाथ बढ़ावे तो ताश को आगे से ढांक के पीछे से उन्हें पान का साबुत गुलाम खींच लेने दीजिये। ऊपर की

आधी कटी ताश को फिर नीचे कर लीजिये।

अब हुआ यह कि जिस आदमी ने ऊपर पान का गुलाम देखा था और वही समझ के ताश खींचा था उसके पास तो हुकुम का गुलाम गया, और जिसने हुकुम का गुलाम समझ के खींचा था उसके पास पान का गुलाम गया। जब दोनों ताश खींचने वाले ताशों को कपड़े के नीचे दबा लें तो उन दोनों से पूछिये कि आपने कौन कौन ताश खींची है। एक हुकुम का गुलाम बतावेगा और दूसरा पान का गुलाम बतावेगा दोनों को अपनी ताशें खोलने को कहिये। जब ताशें देखेंगे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य होगा कि एक की ताश दूसरे के हाथ में कैसे चली गई।

## सोलहवां खेल

### कोठरी के भीतर बैठे बैठे बाहर के ताशों का हाल बताना

बावन ताशों की गड्डी आप हाथ में लीजिये और दर्शकों से कहिये कि "आप लोगों में जो सब

से ज्यादा होशियार हो सो हमारे सामने आवे।" जब कोई आप के पास आवे तो आप उसको कहिये कि "देखिये साहब, हम तो भीतर कोठरी में जा के बैठते हैं। आप इन ताशों को लीजिये, और इनमें से एक ताश जमीन पर रखिये। उसके बिन्दियों की जो गिनती हो उसे मन में खयाल करके उसके आगे से गिनते हुये एक एक ताश उस पर रखते जाइये और इस तरह तेरह की गिनती पूरी कर लीजिये। फिर इसी तरह दूसरा कोई ताश जमीन पर रखिये और उसके बिन्दियों की गिनती से आगे गिनते हुये तेरह पूरा कर लीजिये। इसी तरह तेरह तेरह की जै गड्डी बन सकें आप जमीन पर बना लीजिये और जै ताश अन्त में बच जायं उन्हें अलग रख लीजिये। इसके बाद आपने जितनी ढेरियां बनाई हों और जितने ताश आप के पास बच गये हों आप हम से कह दीजिये। हम सब ढेरियों के सब से नीचे के ताशों की बिन्दियों की संख्या आप को जोड़ के बता देंगे।"

जब वह आप के कहने के मुताबिक काम करे तो आप नीचे लिखी रीति से उसे ऐसा करके बता दीजिये।

जिस संख्या की उसने ढेरी लगाई है, उसमें आप एक और जोड़ दीजिये, अर्थात् तेरह में एक जोड़ने से चौदह हुआ। अब जितनी ढेरियें लगी हैं, उनसे आप चौदह को गुणा कर दीजिये। गुणनफल जो आवे उसमें से आप कुल ताशों की संख्या बाद कर दीजिये, अर्थात् ५२, और जो बाकी रहे उसमें आप बचे हुये ताशों को जोड़ दीजिये। तब आप जो चाहते हैं वह संख्या निकल आवेगी।

उदाहरण

मान लीजिये आपने तीस ताशों की गड्डी लिया। उसमें आपने नौ नौ की गिनती पूरी करते हुये चार गड्डियें जमीन पर लगाईं, और तीन ताश आप के पास बच गये। पहिली गड्डी में इक्का

नीचे है और उसके ऊपर आठ ताशें हैं, दूसरी में चौका नीचे और पांच ताशें ऊपर हैं, तीसरी में इक्का नीचे और आठ ताशें और ऊपर हैं, और चौथी में सत्ता नीचे और उसके ऊपर दो ताशें हैं। आपने गड्डियों में नौ की संख्या पूरी की है इससे नौ में एक जोड़िये, दस हुआ। इस को गड्डियों की संख्या अर्थात् चार से गुणा कीजिये, चालीस गुणनफल हुआ, उसमें से कुल ताशों की संख्या तीस बाद दे दीजिये, दस बचा। उसमें बाकी बचे ताशों की संख्या तीन जोड़ दीजिये, तेरह हुआ। गड्डियों के सब से नीचे के ताशों की चिन्हियों का जोड़ भी तेरह ही है।

यह खेल जितने ताशों में चाहे किया जा सकता है। जितनी संख्या चाहिये पूरी कीजिये, और जै गड्डियें चाहिये लगाइये।

# सत्रहवां खेल

## ताश खिंचवाने के पहिले ही उसका नाम कागज पर लिख देना

यह खेल ऐसी गड्डी से करना चाहिये जिसमें सब ताश एक ही किस्म के हों। जहां से भी दर्शक ताश खींचे उसके हाथ में वही ताश जायगी जिसका नाम आप पहिले कागज पर लिख चुके हैं या किसी को बता चुके हैं। पर खेल करके गड्डी आपको तुरत छिपा देनी पड़ेगी।

जब एक आदमी ताश खींच के देख भाल के उसमें रख दे और दूसरा आदमी खूब सोच विचार के खींचे और उसके हाथ में फिर वही ताश आ जाय तो देखने वालों को बड़ा आश्चर्य होगा।

# अठारहवां खेल

### दर्शक के हाथ का ताश देखते ही देखते और का और हो जाय

गड्डी में सब से ऊपर वाले ताश के नीचे वाला ताश किसी को उठा के दिखाइये। पर उसके पीछे वाला सब से ऊपर का ताश उस में जोड़ के ऐसा छिपा रखिये कि जिसमें देखने वाला जाने की उसे एक ही ताश दिखाया जा रहा है। फिर उन ताशों को गड्डी के ऊपर रख दीजिये और ऊपर वाला ताश जिसे देखने वाला अपना समझेगा उसके रूमाल में बांध के उसके हाथ में दे दीजिये।

जब वह रूमाल को अपने हाथ में ले ले तो झूठ मूठ कुछ मन्त्र पढ़ के रूमाल पर फूंक मार के उससे कहिये कि अपने ताश को रूमाल में से खोले। खोलने पर जब वह दूसरा ताश देखेगा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहेगा।

# उन्नीसवां खेल

### किसी देखने वाले के हाथ के नीचे ढंके ताशों की संख्या बढ़ा देना

ताश की गड्डी को बांयें हाथ में रख के देखने वालों से कहिये कि " आप इनमें से थोड़े से ताश उठा लीजिये ।" जब देखने वालों में से कोई थोड़े ताश उठा ले तो उन्हें कहिये कि उन्हें गिन डाले। जब वह गिनने लगेगा तो प्राय: सभी लोग उसकी तरफ देखने लगेंगे। इस बीच में मौका पा आप गड्डी के बाकी बचे ताशों में से चार ताशों को दाहिने हाथ में अँटिया लीजिये। जब देखने वाला अपनी ताशों को गिन के जमीन पर फैला दे और आपको बता दे कि – मान लीजिये – यह सोलह ताश हैं तो, आप दाहिने हाथ से झट से उन ताशों को समेट डालिये और साथ ही साथ अपने हाथ के चारो ताश भी उनमें मिला दीजिये। फिर उनसे पूछिये कि "क्यों साहब, यह कितने ताश

हैं।" वह निश्चय ही बतावेगा कि "सोलह।" तब आप उससे कहिये कि अच्छा इन ताशों को आप हाथ से ढांक लीजिये और हमें कहिये तो तीन चार ताश और इसमें मन्त्र के बल से बढ़ा दें।" यदि वह कहे कि "चार बढ़ा दीजिये।" तब तो ठीक ही है। चार उसमें बढ़ ही गये हैं। आप ताशों पर मंत्र की फूंक मार के उससे कहिये कि गिने तो वह बीस निकलेंगे। पर अगर वह कहे कि आप तीन और बढ़ा दीजिये" तो आप उससे कहिये कि "अच्छा, आप उसमें से एक ताश हमें दे दीजिये, जिसमें हमारी तीन ताशों को वहां जाने का रास्ता मालूम हो जाय।" जब वह ताश दे दे तो उसे अपने पास रख के उसकी ताशों को पुनः गिनवाइये तो वे उन्नीस निकलेंगी। यदि वह कहे कि एक ही ताश बढ़े तो आप उससे तीन ताश तीन आदमियों को दिला दीजिये, तो उसके पास एक ही बढ़ेगा, अर्थात् सत्रह ही रह जायंगे।

# बीसवां खेल

### किसी पहिचाने हुये ताश को उतने ही ताशों के नीचे से निकालना जितने ताशों के नीचे से पहिचानने वाला कहे

गड्डी की किसी एक ताश को किसी से पहिचनवा के पास करिये और उसे सब के ऊपर ले जाइये। फिर ऊपर की दो ताशों को गड्डी के नीचे रख दीजिये। इससे आपका ताश गड्डी में सब से नीचे से दूसरा हो जायगा। अब आप पहिचानने वाले से पूछिये कि "क्यों साहब, आपका ताश अब नीचे से कै ताशों के बाद निकले।" मान लीजिये उसने कहा कि "पांच ताशों के बाद," तो आप सब से नीचे के ताश को निकाल के उसके सामने रखिये और कहिये कि "एक।" फिर दूसरे ताश को जो आप का पहिचाना हुआ ताश है तनिक पीछे सरका लीजिये और तीसरे ताश को निकाल के उसके सामने रख के

कहिये "दो", यों ही जब पांच हो जायं तो हाथ के सब ताशों को जमीन पर रख दीजिये। उसमें आपका जाना हुआ ताश सबके नीचे रहेगा।

अब आप देखने वालें से कहिये कि "साहब, नीचे से निकाल के पांच ताश मैंने आप के सामने रख दिये, अब छठवां आपका है। कहिये तो दिखा दें।" जब वह दिखाने को कहे तो आप निकाल के दिखा दीजिये, उसे बड़ा आश्चर्य होगा।

इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक खेल तब हो जब कि कई आदमी अलग अलग ताश पहिचानें, और जै जै ताश के बाद चाहें उनमें से प्रत्येक का ताश निकले। यह खेल आपको इसी पुस्तक में आगे मिलेगा।

# इक्कीसवां खेल

ताशों को काट करके बिछाते ही चारो रंग आप से आप अलग हो जायं। इतना ही नहीं, चारों रंगों में एक्के से बादशाह तक सब क्रम से लग जायं

यह खेल लगी हुई ताश में होता है। एक ही मेल के चार चार ताशों के तेरह ढेर आप इस तरह लगाइये कि सब से ऊपर हुकुम की इक्की, फिर पान की, तब चिड़ियां और इसके बाद ईंट की इक्की हो। फिर दूसरे ढेर में चारों दुक्कियें हों, तीसरे में चारो रंग की तिक्कियें हों, इसी क्रम से तेरह ढेर लगा लीजिये। इसके बाद उन्हें क्रम से उठा के हाथ में रख के एक ढेर बना लीजिये और उसे काट डालिये, फेंटिये मत। तब नीचे से एक एक ताश लेते हुए जमीन पर चार ढेर लगाइये। एक पर एक ताश क्रम से रखते चलिये। सब ताशों के खतम होने पर तेरह तेरह ताशों के

चार ढेर हो जायंगे। उलट के देखियेगा तो इक्के से बादशाह तक तेरह तेरह ताश चारों रंगों के अलग अलग होंगे।

इसी तरीके पर यदि आप एक एक मेल के ताश अलग अलग करना चाहेंगे तो वह भी हो सकेगा। पहिले चारो रंग अलग कर लीजिये और फिर उन्हें एकी, दुकी, तिकी, चौकी के क्रम से अलग कर के चारो का एक ढेर कर लीजिये। अब पहिले की तरह उन्हें तेरह ढेर में बिछाइयेगा तो एक ही मेल के चार चार ताश अलग हो जायंगे।

## बाईसवां खेल

### बिलक्षण रीति से ताशों का क्रम लगाना

ऐसी रीति से ताशों का क्रम रखना कि यदि गड्डी में नीचे से निकालते हुये एक ताश जमीन पर और एक ताश गड्डी के ऊपर रखते

चला जाय तो जमीन पर एक से तेरह तक या एक से बावन तक ताशें क्रम से लग जायं, और एक से बावन तक जो ताशें लगें उनके रंग भी अलग अलग हो जायं।

इस खेल में ताशों को नीचे लिखी रीति से लगाना चाहिये। तेरह ताशों में यदि खेल करना हो तो यह क्रम होगा—

१, बेगम, २, ८, ३, गुलाम, ४, ६, ५, बादशाह, ९, १०, ७।

तेरहों ताशों को इस क्रम से लगा के यदि आप नीचे से आरम्भ कर के एक ताश जमीन पर और एक ताश गड्डी के ऊपर रखते जायंगे, तो नीचे तेरहों ताशें क्रम से लग जायंगी।

यदि आप बावन ताशों में इस खेल को करना चाहें, तो इस क्रम से ताशों को लगावें :–

| हु० | चि० | हु० | ई० | हु० | चि० | हु० | ई० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | २ | १ | ३ | २ | ४ | बेगम |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हु० | चि० | हु० | ई० | हु० | चि० | हु० | ई० |
| ५ | ५ | ६ | २ | ७ | ४ | ८ | ८ |
| हु० | चि० | हु० | ई० | हु० | चि० | हु० | ई० |
| ६ | ५ | १० | ३ | गुलाम | ६ | बेगम | गुलाम |
| हु० | चि० | पा० | ई० | पा० | चि० | पा० | ई० |
| बादशाह | ७ | १ | ४ | २ | ८ | ३ | ६ |
| पा० | चि० | पा० | ई० | पा० | चि० | पा० | ई० |
| ४ | ६ | ५ | ५ | ६ | १० | ७ | बादशाह |
| पा० | चि० | पा० | ई० | पा० | चि० | पा० | ई० |
| ८ | गुलाम | ६ | ६ | १० | बेगम | गुलाम | १० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पा० | चि० | पा० | ई० |
| बेगम | बादशाह | बादशाह | ७ |

खेल शुरू करने के पहिले ही ताशों को लगा लेना चाहिये या यदि आपको संख्या और रंग ठीक याद रहे तो खेल करने के पहिले ही क्षण भर में सब ताशें लग सकती हैं। पर उसके लिये आप की स्मरण शक्ति ठीक होनी चाहिये।

यही खेल इस तरह भी हो सकता है कि आप नीचे से निकाल निकाल के एक ताश जमीन पर और दो ताशें गड्डी के ऊपर रखते जायं, और नीचे जमीन पर सब ताशें क्रम से लग जायं। उसके लिये तेरह ताशें इस क्रम से लगाइये :—

गुलाम, ५, १, ८, १०, २, ६, बेगम, ३, ६, ७, ४, बादशाह।

इसी खेल को आप बावन ताशों में भी कर सकते हैं। अर्थात् बावन ताशों को आप इस क्रम से लगा सकते हैं कि यदि एक ताश जमीन पर और दो ताशें गड्डी के ऊपर रखते चले जायं तो नीचे तेरह तेरह ताशें क्रम से इक्के से बादशाह तक चार रंगों में विभक्त हो जायं। कुछ बुद्धि लगाने से यह खेल आपकी समझ में आजायगा। यही नहीं, इस तरह के सैकड़ों क्रम भिन्न भिन्न प्रकार से लगाये जा सकते हैं । पर उन अंकों को याद रखना बहुत ही कठिन होगा।

आगे चल के इस पुस्तक के दूसरे खंड में

हम ऐसी रीति और युक्ति लिखेंगे कि उससे चाहे जितने तरह से इस खेल को कर डालिये। आप को कोई अंक आदि याद रखने की जरूरत न पड़े।

## तेईसवां खेल

### ताशों की ढेरियों में से जो ताश मांगते जाना वही निकाल के दिखाना

चार ढेर ताशों के अलग अलग लगा दीजिये और पहिले ही से किसी ढेर के नीचे या ऊपर का एक ताश जाने रहिये। माना कि आपने चिड़िये का पंजा पहिले ढेर के नीचे रक्खा और चार ढेर लगा दिये। अब आप पहिले ढेर में एक ताश खींचिये और कहिये कि चिड़िये का पंजा खींचते हैं। मान लीजिये वह खींची हुई ताश पान का अट्ठा आया, तो दूसरे ढेर में से फिर एक ताश खींचिये और कहिये कि पान का अट्ठा खींचते

हैं। फिर वह जो ताश आवे उसका नाम ले के तीसरे ढेर में से एक ताश खींचिये। यों ही पांच सात ताशें खींच जाइये और जो ताश सब से पीछे खींचिये उसी का नाम लेकर पहिले ढेर के नीचे से अपना जाना हुआ ताश चिड़िये का पंजा खींच लीजिये। अब देखने वालों से पूछिये कि हमने कौन कौन ताश खींचा था! वे जैसे जैसे बताते जायं वैसे वैसे ताश निकाल के आप उनके सामने रखते जाइये।

## चौबीसवां खेल

किसी पहिचाने हुये ताश को उन्हीं तीन ताशों में से निकालना जिनमें कि देखने वाला कह दे कि हमारा ताश नहीं है

पहिले किसी ताश को दर्शक से पहिचनवा के उसे पास करिये और सब ताशों के ऊपर ले जाइये। फिर एक ताश बीच में से निकाल के

पहिचानने वाले को दिखाइये और उससे पूछिये कि "यह तुम्हारा ताश है ?" वह कहेगा कि "नहीं !" तब आप आश्चर्य से कहिये कि "क्या यह आपका ताश नहीं है, अच्छा देखिये यही आप का ताश हो जायगा।" यह कह के दाहिने हाथ वाले ताश को आप झट बायें हाथ वाली गड्डी के पास लाइये और ऊपर वाले ताश से बदल के जमीन पर औंधा रख दीजिये, इसके बाद एक ताश और बीच में से निकालिये और उसे गड्डी से छुआ के नीचे वाली ताश के बगल में रख दीजिये। इन दोनों ताशों को भी उसे दिखा के रखिये। वह अवश्य ही कहेगा कि हमारा ताश इन तीनों में कोई नहीं है है। तब आप धीरे से ताशें उलट दीजिये। अपनी पहिचानी ताश उन्हीं ताशों में से निकलते देख उसे बड़ा आश्चर्य होगा।

पहिली वार ताश बदलती वक्त आप यह न समझियेगा कि लोग आप को देख लेंगे या समझ जायंगे। जब आपका हाथ मंज जायगा तो लोगों



६

के देखते देखते आप चार चार ताशों को बदल डालेंगे और कोई न समझ सकेगा।

जब कोई ताश बदलना हो तो उसे दूसरी या तीसरी बार में बदलना चाहिये। पहिली बार में बदलने से लोग समझ जायंगे। अथवा आप अट्ठारहवें खेल की रीति से भी बदल सकते हैं।

## पचीसवां खेल

यद्यपि चौबीस खेल पहिले लिखे जा चुके हैं, पर यह जो पचीसवां खेल लिखा जा रहा है इसके आगे पीछे के चौबीस खेल सब मात हैं।

यह खेल जान के आप पीछे के खेलों में से कई एक बहुत सहज तरीके से कर सकते हैं और दस पांच खेल स्वयं सोच के बना भी सकते हैं। आगे दूसरे खंड में आप जितने खेल पावेंगे सब इसी तरीके के होंगे।

यह खेल लगे हुये ताशों से होता है, और इन

लगी हुई ताशों का क्रम ऐसा होता है कि आप कितना भी काटें उनका क्रम कभी न बिगड़ेगा। ताश इस पहेली के अनुसार बैठाये जाते हैं।

आठ भूप के दस दो साथी
सेना पांच और बारह हाथी
चार एक रस हैं हलकारे
हुकुम पाय खग ईंटन मारे

पहेली का अर्थ इस प्रकार समझिये। आठ (अट्ठा) भूप (बादशाह) के (तिक्की) दस (दहला) दो (दुक्का) साथी, सेना (सत्ता-और नहला) पांच (पंजा) और बारह (बेगम) हाथी। चार (चौका) एक (इक्का) रस (छक्का) हैं हलकारे (गुलाम), हुकुम पाय (पान) खग (चिड़िया) ईंटन (ईंट) मारे।

"हुकुम पाय खग ईंटन मारे" इससे अर्थ है चारों रंगों का, अर्थात् इसी क्रम से एक एक ताश एक एक रंग का होगा। आप बावन ताशों को,

एक एक ताश को एक एक रंग का रखते हुए, इसी क्रम से बैठा जाइये। अर्थात् पहिले हुकुम का अट्ठा, तब पान का बादशाह, फिर चिड़ी का तिक्का, तब ईंट का दहला, तब हुकुम की दुक्की, तब पान का सत्ता, इसी तरह सब ताश रहेंगे। सब ताशों के लग जाने पर आप इन्हें दर्शक के सामने काट सकते हैं। क्रम में कोई खराबी न होगी।

इस क्रम से लगी ताश की गड्डी के खेल

ताश की गड्डी बायें हाथ में ले के दाहिने हाथ से कुछ ताश ऊपर से उठा लीजिये। और तब दर्शक से कहिये कि बायें हाथ में सब से ऊपर जो ताश है उसे हाथ में उठा ले। अब आप चुपके से दाहिने हाथ के ताशों में सब से नीचे वाला ताश देख लीजिये। मान लीजिये कि वह ताश हुकुम का पंजा है। तो आप जानते हैं कि हुकुम के नीचे पान होता है और पंजे के नीचे

बेगम होती है, तो आप झट बता सकेंगे कि दर्शक के हाथ में पान की बेगम है। यों ही अगर कई आदमी एक एक एक ताश ले लें तो आप सभों के हाथ के ताशों के नाम बता सकेंगे।

यदि कोई आदमी किसी ताश का नाम ले, तो आप बता सकेंगे कि वह ऊपर से नीचे गिनती में कैवां है। या आप ऊपर से आरंभ करके एक एक ताश दर्शक के हाथ में देते जाइये और बतलाते जाइये कि वह कौन ताश है।

ऐसे ऐसे कई खेल आप सोच के इस लगी हुई ताश से कर सकते हैं।

# निवेदन

ताशकौतुकपचासा के खेलों में से पचीस ऐसे खेल आप के सामने रक्खे जा चुके जो कि अपेक्षाकृत सहज थे और जिन्हें करने में विशेष तरद्दुद या ऊपर के बाहरी सामानों या बनी हुई ताशों की जरूरत न पड़ती थी। अब आगे के दूसरे खंड में कुछ ऐसे खेल पाठकों के सामने रक्खेंगे जो इनसे ज्यादा कठिन और इनसे बहुत अधिक रोचक और आश्चर्यजनक हैं।

हम पहिले लिख चुके हैं कि खेलों के करने में पाठकों को नियम और अभ्यास पर विशेष दृष्टि रखनी पड़ेगी। नियम का पालन करना होगा और प्रत्येक खेल को करने का यथेष्ट अभ्यास करना होगा। तब वह इस लायक होगा कि दो चार आदमियों के सामने दिखाया जाय। किसी लड़के

को इन खेलों को कभी न सिखाना चाहिये।

कई खेल इनमें ऐसे भी मालूम होंगे जो एक बेर के करने में ठीक समझ में न आवेंगे। पाठकों को चाहिये कि एक बेर में न समझें तो पुस्तक में लिखे नियम के अनुसार उसे दो तीन दफे कर के देखें, तब वे उन्हें ठीक तौर से कर सकेंगे।

आगे दूसरे खण्ड में जो खेल हम देंगे वे तभी ठीक तरह पर किये जा सकेंगे जब पाठक पहिले इस प्रथम खण्ड के खेलों को करने का अच्छी तरह अभ्यास कर लें। बिना इनका ठीक अभ्यास किये वे आगे वाले खेल ठीक न हो सकेंगे।

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# दूसरा खण्ड

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# ताशकौतुकपचासी

## दूसरा खण्ड

इस भाग में कई एक विशेष बातों के जानने की आवश्यकता है जिनके ज्ञान बिना पाठकों को बड़ी दिक्कत पड़ेगी। यद्यपि हमने इन सब चीजों के नाम और काम पहिले भाग में नहीं लिखे, तथापि उनका यहां लिखना आवश्यक जान पड़ता है। इन चीजों के न होने से आगे के खेलों का पूरा उतरना अत्यन्त कठिन है।

पहले तो "मन्त्र की छड़ी" अवश्य ही चाहिये। यह सुन्दर रंगीन छड़ी १० या १५ इंच तो लम्बी हो और उसका व्यास भी अनुमान एक इंच के हो। यदि पीतल की बनी हुई हो तो फिर क्या पूछना है।

देखने वाले यह समझेंगे कि यह केवल भड़ंवे के लिये हैं, परन्तु यह उनकी भूल है। इससे कई उत्तम उत्तम काम होते हैं। कितने ही खेल ऐसे हैं कि उनमें हाथ को कुछ नीचे ऊपर हिलाना पड़ेगा। यदि मन्त्र की छड़ी होगी तब तो जादू करने के बहाने से बात निभ जायगी, नहीं तो खाली ही हाथ हिलाना भद्दा जान पड़ता है और लोग सन्देह करने लगते हैं। फिर यदि किसी अंटियाये हुये ताश को इधर उधर हटाना हुआ तो मन्त्र की छड़ी उठाने के बहाने से पीछे मुंह मोड़ अपना काम चलाया जा सकता है, और यदि कोई ताश हाथ में अंटियाया हो तो उसी हाथ में मन्त्र की छड़ी रखने से आप पर कोई सन्देह न करेगा। एक लाभ इससे यह भी है, कि जब कोई ताश बदलना होता है तो यह सुभीता होता है कि जब ताश को मन्त्र की छड़ी से ठोंकते हैं, तब लोग समझते हैं कि अदल बदल हुआ, पर बदला पहिले ही हो जाता है।

## जादू का टेबुल

यद्यपि कितने खेल बिना टेबुल की सहायता के हो सकते हैं, तथापि कितने खेलों में इसकी आवश्यकता पड़ जातो है । इसलिये इसका साधारण वर्णन कर देते हैं। यह टेबुल साधारण टेबुलों से अनुमान ६ या ८ इंच ऊंचा होना चाहिये और पिछली ओर एक छोटा सा दराज निकला हुआ चाहिये, जो बराबर टेबुल के एक कोने से दूसरे कोने तक बना हो। इसका नाम "चोर घर" है। इससे यह लाभ होता है, कि जब कोई चीज उड़ाना हुआ, तो वह इसी में सफाई से रख दी जाती है। इसमें ऊन या मोटा कपड़ा लगा रहता है, जिस में किसी चीज के गिरने से खटका न हो।

## वस्त्र

इसमें कुछ विशेष बनावट नहीं है, परन्तु पांच सात जेब ऐसे चाहियें कि उनमें जब चाहें

तब कुछ छिपा दिया जाय और लोगों को यह न जान पड़े कि वे जेब कहां हैं।

पाठकों को स्मरण होगा कि काटना फेंटना अंटियाना और पास करना इत्यादि का हाल हम प्रथम भाग में लिख चुके हैं। उनका पुनरुल्लेख यहां नहीं करते, परन्तु जिन जिन बातों की इस भाग में आवश्यकता है और उनका वर्णन पहिले भाग में नहीं किया गया है, वे सब यहां लिखे जाते हैं।

हुक्मी झोंक

इसका यह अभिप्राय है कि जिस ताश को आप चाहिये उसी ताश को खींचने वाला निकाले, यद्यपि वह यही समझता है कि मैं अपनी ही इच्छानुसार ताश निकालता हूँ। इसकी तरकीब यह कि जिस ताश को आप खिंचवाया चाहते हैं उसे पहिले सब के नीचे रखिये और देख लीजिये कि वह कौन ताश है। फिर देखौए फेंट की रीति से उसे ऊपर ले आइये और दूसरे दस पन्द्रह ताश

उसके ऊपर रख दीजिये जिसमें वह ताश ( जिसे आप खिंचाया चाहते हों) बीच में चली आय, परन्तु वह जहां रहे उसे खूब याद रखिये। अब गड्डी को बांयें हाथ में लेकर धीरे धीरे बांयें हाथ के अंगूठे से ताशों को दाहिने हाथ में सरकाते चलिये, और ताश खींचने वाले से एक ताश उसमें से निकालने को कहिये। जब वह अपना हाथ ताश खींचने को पास लावे और ज्यों ही ताश पकड़ने को उंगलियां खोले त्योंही आप उस ताश को ( जिसे आप खिंचवाया चाहते हों ) उसके आगे इस प्रकार कर दीजिये जिसमें वह उसी ताश को खींचे। यदि आप इस प्रकार करियेगा तो ९९ बिस्वे वह उसी ताश को खींच ले जायगा। हमारे पाठक लोग मनमें यह सोचते होंगे, कि यह बड़ी कठिन बात है, परन्तु मैं उनसे यह प्रार्थना करता हूँ कि ताशों को हाथ में लेकर यह खेल कर के देखिये, तब आपको जान पड़ेगा कि यह सहज है या कठिन। इसमें कुछ भी कठिनता नहीं है, देखने ही

को पहाड़ जान पड़ता है, परन्तु है अत्यन्त ही सहज। जब तक वह खींचने वाला ताश लेने की बात सोच रहा हो तब तक धीरे धीरे ताशों को दहिने हाथ में सरकाइये पर ज्योंही वह खींचने को हाथ बढ़ावे त्योंही उस ताश को उसकी उंगलियों के सामने लाकर जरा सा ठहर जाइये। बस आपका काम हो जायगा। यदि तब भी वह उस ताश को न खींचे तो सब ताशों को मिला दीजिये,परन्तु अपनी कानी उंगुली उस ताश पर जमाये रहिये जैसा पास करने में होता है, और फिर उसी प्रकार उसके सामने ले जा कर कहिये कि "हां डरिये मत, वे खटके खींचिये।" बस दूसरी बार अवश्य वह उसी ताश को खींच लेगा।

पाठकों को जानना चाहिये कि इसमें जरा अभ्यास का काम है। बस इतने ही से अच्छे अच्छे होशियार धोखे में फंस जाते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि खेल दिखाने वाला चूक

भी जाता है। तो भी कुछ चिन्ता नहीं। उस ताश के फिर से जान लेने की अनेक युक्तियां हैं। सदैव कार्य सुफल हो इसके लिये तदबीर ही दूसरी है, वह यह कि गड्डी भर के ताश एक ही रंग के हों, तब फिर आप असफल नहीं हो सकते।

### ताशों को सरका देना

इससे अभिप्राय है, कि ताश फेंटे भी जांय परन्तु पहिचाना हुआ ताश गड़बड़ में न पड़े। पहिचाने हुये ताश को सब के ऊपर ले आइये। अब गड्डी को बांयें हाथ में इस प्रकार लीजिये कि उसके पीठ की तरफ तो उंगलियां सटी रहें और आगे से अंगूठा दबाये रहे। तब बीच में से ताशों को निकालिये और आगे रख के फेंटते जाइये जरा से भी दबाव से पीछे वाला ताश वहां का वहीं पड़ा रहेगा। लोग समझेंगे कि सब ताश फेंट दिये।

## पुल

इसका यह अभिप्राय है कि गड्डी को आधे आध इस प्रकार कर डालना, कि उनका मुंह से मुंह सट जाय और दोनों ओर पीठ पीठ ही दिखाई पड़े। इससे कई खेलों में सहायता मिलती है।

## ताशका बदलना

जैसा ताश बदल जाने में लोगों को आश्चर्य होता है, ऐसा शायद किसी खेल में भी न होता होगा। इस खेल के करने की यह तरकीब है।

( १ ) दाहिने हाथ के अंगूठे और पहिली अंगुली में किसी ताश को पकड़िये और देखने वालों को दिखला दीजिये। इसे हम नम्बर दो वाला ताश कहेंगे। इसमें दो बिन्दी रहेगी।

( २ ) बाकी गड्डी के सब ताशों को बायें हाथ में लीजिये, परन्तु जो ताश बदल कर दाहिने हाथ वाले ताश के स्थान में आने वाला है वह गड्डी

में सब से ऊपर रहे और कुछ आगे निकला रहे। उसे हम नम्बर एक वाला ताश कहेंगे।

( ३ ) बात करते करते अपना दाहिना हाथ बायें हाथ के पास ले जाइये और नम्बर दो वाला ताश नम्बर एक वाले पर रख दीजिये।

( ४ ) झट दोनों ताशों को अंगूठे और पहिली अंगुली के बीच में रखिये और एक को आगे तथा दूसरे को पीछे सरकाइये, अर्थात् नम्बर दो को तो बगल में घसका दीजिये और नम्बर एक को नीचे से खींच लीजिये।

( ५ ) बाद में नम्बर दो वाले ताश को तो वहीं छोड़ दीजिये और दाहिने हाथ से नम्बर एक वाले को खींच लीजिये।

ये सब बातें स्पष्टता के लिये अलग अलग लिखी गईं हैं, परन्तु यह सब काम पलक मारते में होना चाहिये। कितने लोग ताश के बदल जाने पर दाहिना हाथ न खींच के बांयें ही हाथ को खींच लेते हैं, यह भी उत्तम रीति है।

यदि इसमें अभ्यास हो जाय तो चाहे कैसा ही होशियार देखने वाला क्यों न हो, अवश्य आप के धोखे में आ जायगा।

## मन में सोच हुये ताश के जानने की तर्कीब

इस काम के लियें केवल फुरती ही की आवश्कता नहीं है, कुछ चालाकी भी चाहिये।

( १ ) गड्डी में से एक ताश चुन लीजिये जिसे लोग अनायास ही खूब पहिचान लें। ( पाठकों का स्मरण रखना चाहिये, कि यह कुछ स्वभाव सिद्ध है कि यदि दस बीस ताशों. में केवल एकही इक्की या केवल एक ही तस्वीर हो तो देखने वाला उस इक्की या तस्वीर को प्रायः तुरत पहिचान जायगा। )

( २ ) इस ताश को कहीं बीच में रखिये और अपनी कानी उंगली को इस ताश के पीठ पर रहने दीजिये जैसा पास करने में होता है।

( ३ ) देखने वाले के पास जाकर कहिये कि "इसमें से एक ताश अपने मन में पहिचान लीजिये,

हम आपको ताश दिखला भी देते हैं।" इतना कह उसकी आंखों के सामने से सब ताशों को सरकाय चलिये, परन्तु ताशों का मुंह देखने वाले की ओर ही रहे। ताशों को इतना शीघ्र सरकाना चाहिये कि देखने वाले की निगाह किसी विशेष ताश पर न जमने पाये। यहां तक कि जब तस्वीर आ जाय जिसे आप चिन्हवाया चाहते हों, तो जरा सा उस ताश पर ठहर कर फिर सभों को सरकाय चलिये। यह तस्वीर कुछ स्पष्ट और खुली रहने के कारण देखने वाले की निगाह में झट जम जाती है और उसे वह झट पहिचान लेता है।

जब वह इस प्रकार ताशों को देख रहा हो तो आप उसकी आंखों की तरफ देखते रहिये और ध्यान रखिये कि वे कहां ठहरती हैं। यदि वे उसी तस्वीर पर ठहरें और देखने वाला आगे के ताशों पर ध्यान न दे तो निश्चय जानिये कि उसने उसी ताश को पहिचाना है, और यदि वह अन्त के ताशों तक देखता ही चला जाय तो सम्भव है कि कदा-

चित और किसी ताश को याद कर ले। स्मरण रखना चाहिये कि पहिला ताश खूब ही दबा रहे। ऐसा न हो कि वह उसी ताश को झट पहिचान ले। यदि वह कोई दूसरा ताश पहिचान भी ले तो भी कुछ चिन्ता नहीं इस दिक़त को दूर करने की बहुत सी तरकीवें हैं, जिनका वर्णन आगे किया गया है।

# छब्बीसवां खेल

## ताशों को दौड़ाना

जितने ताश के खेल हैं, उनमें से यह खेल भी बड़ा ही अद्‌भुत है। जितना ही अधिक अन्तर दोनों हाथों में होगा, उतना अधिक देखने वालों को आश्चर्य होगा। तरकीब इसकी यों है —

ताश की गड्डी को दाहिने हाथ के अंगूठे और पहिली दो उंगलियों के बीच लम्बोलम्ब पकड़ के धनुषाकार मोड़िये। इस तरह पकड़ने से वे ताश स्वभावतः उस हाथ में से निकल भागना चाहेंगे। उन ताशों का बांयें हाथ में आप रोक लीजिये। फिर बांया हाथ दाहिने हाथ से थोड़ी दूर पर रखिये और ताशों को जरा हलका सा दबाइये कि जिसमें वे एक एक करके दाहिने हाथ में उड़ने लगें। जितने ही मोटे और चिकने ताश होंगे उतने ही दूर उड़ के जांयगे। जिन लोगों को इसमें

अभ्यास हैं वे प्रायः डेढ़ फुट तक ताशों को इस प्रकार दौड़ाते हैं।

जो महाशय इस अभ्यास में निपुण नहीं हैं, उनके लिये हम दूसरी युक्ति लिखते हैं जो बने हुये ताशों में हो सकती है, पर फिर भी पाठकों को यह जानना चाहिये कि असल असल है, नकल नकल है।

### ताश बनाने की युक्ति

बावन ताशों को (यदि कम हों तो भी हर्ज नहीं) इस प्रकार लेई से साटिये कि पहिले दो ताशों का ऊपरी हिस्सा सिरे पर आपस में जुड़ा हो और दूसरे और तीसरे का नीचला हिस्सा एक में सटा हो। तीसरे और चौथे का ऊपरी हिस्सा जुड़ा हो, योंही सब ताश बने रहें।

कुछ ताश अनुमान १० या १५ खुले भी रहने चाहियें कि जिन्हें आप आनन्द से फेंटते रहिये। उन्हें अलग २ देखने से लोग यही समझेंगे कि

सभी ताश जुदे जुदे हैं। बस यौंही फेंटते फेंटते वनी हुई ताशों में से एक या दो को बायें हाथ में पकड़ के बाकी को दाहिने हाथ से ऊपर उठा लीजिये। जरा से ढीला होने ही से सब ताश सड़ासड़ आगे पीछे कतार बांध बायें हाथ में उतरने लगेंगे। जब ताश छूटने लगें तो दाहिने हाथ में से ताशों को छोड़ना कभी न चाहिये वरन बायें हाथ को झट ऊपर बढ़ा के पकड़ लेना चाहिये। ये दोनों कृत्य ऐसी फुरती से होने चाहियें कि देखने वालों को खेल के ताड़ने का समय हाथ न आवे। लोग यही समझेंगे कि यह आपके हाथ की मंजावट है।

## सत्ताईसवां खेल

### एक कतार ताश का क्षण भर सीधे से उलटा और उलटे से सीधा हो जाना

ताश की गड्डी को टेबुल पर उलटा रख के एक कतार इस तरह फैलाइये कि एक की पीठ

पर दूसरा और दूसरे की पीठ तीसरा, प्रत्येक ताश का सिरा जरा जरा निकला रहे और उसका शेष भाग ऊपर वाले ताश से ढका रहे। जब इस तरह एक कतार बन्ध जाय तो देखने वालों में से किसी आदमी को सामने बुला के उसे किसी लम्बे से कपड़े का एक कोना पकड़ा दीजिये और उससे कहिये कि "आप इन ताशों को ढांके रहिये।" आप भी अपने बायें हाथ से कपड़े को थामे रहिये और ताशों को ढांकने में उसकी सहायता करिये। ज्योंही वह ढांकने लगे त्योंही आप अपने दाहिने हाथ से उस कतार के सिरे वाले ताश को पकड़ के सीधा कर दीजिये। बस उस एक ही के सीधे होने से सब ताश सीधे हो जायंगे। कतार के किस तरफ के ताश को सीधा करना चाहिये यह आपको खेल करने से आप ही मालुम हो जायगा। फिर जब तक कतार न बिगड़े सीधे से उलटा और उलटे से सीधा किया करिये। मगर एक ही बेर खेल करना चाहिये। अधिक नहीं।

# अट्ठाईसवां खेल

**कोई आदमी किसी ताश को मन में सोच ले तो उसी ताश को दूसरे आदमी से निकलवाना**

यद्यपि यह खेल बड़ा कठिन जान पड़ता है, यथापि जब तक इसका भेद नहीं मालुम है तभी तक आपको कठिन जान पड़ता है, भेद खुलने पर यह सहज हो जायगा।

ताश की गड्डी दर्शक के सामने कर के उससे कोई एक ताश खिंचवाइये और फिर उसे उसी गड्डी में रखवा लीजिये। मान लीजिये उसने हुकुम की बेगम पहिचान लिया।

अब दूसरे दर्शक के पास जा कर आप हुक्सी झोंक द्वारा हुकुम की बेगम ही उसे खिंचवा दीजिये, पर उसे कह दीजिये कि वह अपने ताश को अभी देखे नहीं।

फिर पहिले दर्शक से पूछिये, "क्यों साहब, आपने कौन ताश पहिचाना था?"

वह कहेगा, "हुकुम की बेगम।"

तो आप कहिये, "आपने अपनी इच्छानुसार ताश खींचा था न ?"

वह कहेगा, "निस्सन्देह।"

तब आप दूसरे दर्शक से पूछिये, "क्यों साहब आप ने भी इच्छानुसार ताश खींचा है न ?"

वह कहेगा, "जी हां।"

तब आप कहिये, "देखिये तो सही, कैसे आश्चर्य की बात है। आप दोनों अलग अलग आदमी, दोनों ने अपनी इच्छानुसार अलग अलग ताश खींचा है, पर कैसी मजेदार बात है कि दोनों के हाथ में ताश एक ही गई। आप को विश्वास न हो तो आप ताश खोल के देख लीजिये।

जब वह ताश उलट के देखेगा तो उसे आश्चर्य होगा कि उसने वही ताश कैसे खींच लिया जिसे दूसरे ने पहिचाना था।

इस खेल के दिखाने में दो कठिनाइयें पड़ सकती हैं। एक तो यह कि पहिली बार ताश खींचने

वाला आपको धोखा देने के लिये ताश का गलत नाम बतावे, या आप हुक्मी झोंक द्वारा दूसरे दर्शक को वही ताश न खिंचवा सकें जो पहिले दर्शक ने खींचा था। उसके बचाव की भी तर्कीब है।

मान लीजिये पहिली बार के ताश खींचने वाले ने खींचा तो हुकुम की बेगम ही, पर जब आप हुक्मी झोंक द्वारा उसे दूसरे के हाथ में दे चुके तो उसने कहा कि "हमने पान का गुलाम खींचा था।" उस वक्त आप किसी बहाने से गड्डी में से खोज कर पान का गुलाम सब ताशों के नीचे कर लीजिये और फिर पास करके उसे सब के ऊपर ले आइये। तब आप मन्त्र पढ़ने के बहाने दूसरे दर्शक के हाथ का ताश ले कर गड्डी की उस ऊपर वाली ताश से बदल कर फिर उसके हाथ में दे दीजिये। इस तर्कीब से पान का गुलाम उसके हाथ में पहुंच जायगा।

अगर हुक्मी झोंक द्वारा आप वही ताश न खिंचवा सके तो उस ताश को किसी तर्कीब से

गड्डी के ऊपर ले आइये और दूसरे दर्शक ने जो ताश खींचा है वह उसके हाथ से ले कर और बदल कर गड्डी के ऊपर वाली ताश उसे पकड़ा दीजिये।

## उन्तीसवां खेल

एक ताश गड्डी में से निकाल कर टेबुल पर रख देना और किसी आदमी से कहना कि एक ताश मन में सोच ले, फिर वही ताश उसका हो जाय

किसी आदमी से जा आप से कुछ दूर हो कहिये कि वह अपने मन में एक ताश सोच लें। जब वह कहे कि हां हमने एक ताश मन में सोच लिया, तब आप गड्डी में से एक ताश टेबुल पर रख दीजिये। हुकुम की एक्की ही टेबुल पर रखना चाहिये, क्योंकि प्रायः लोग इसे ही सोचते हैं।

तब आप कहिये, "देखिये साहब, मैंने यह ताश यहां रख दिया है। अब आप सभों को सुना के कहिये कि आपने कौन ताश सोचा था।"

जो तो उसने एक्की ही कहा तब तो अब मत पूछिये कि कौन सी एक्की है, झट उस ताश को उलट कर दिखा दीजिये। और जो उसने एक्की न कहा, कुछ और ही कहा, जैसे "पान का दहला", तो बस वही तर्कीब लगाइये जो हम ऊपर वाले खेल में बता चुके हैं। अर्थात् पान का दहला गड्डी में से खोज के उसे ऊपर कर लीजिये और फिर उस टेबुल वाली ताश से उसे बदल दीजिये।

# तीसवां खेल

कोई आदमी एक ताश अपने मन में सोच ले और दूसरा आदमी किसी एक गिनती का नाम लेवे, तो उस ताश को उसी गिनती पर निकालना जो कि उसने कहा है

यह ऐसा खेल है कि इसमें लोगों को अत्यन्त ही आश्चर्य होता है। किसी आदमी को एक ताश मन में सोच लेने दीजिये (वही हिकमत लगाइये जो हम पांचवें पन्ने में लिख चुके हैं। )

माना कि आपने हुकुम की मेम सोचवाया।

अब आप देखीये फेंट से या और किसी युक्ति से इस हुकुम की मेम को ऊपर से "सातवां" रखिये।

तब किसी दूसरे देखने वाले से कहिये कि "कृपा कर एक और दस के अन्दर किसी अंक का नाम तो मन में लीजिये।"

इसमें कुछ भी सन्देह मत समझिये कि वह आदमी ९९ विस्वे अवश्य सात ही मन में सोचेगा। इसका क्या कारण है यह ठीक नहीं कहा जा सकता, परन्तु प्रायः हमने सैंकड़ों वेर देखा है ऐसा ही हुआ है। पर यदि वह सात न भी कहे तौ भी खेल न बिगड़ेगा। उसकी तरकीब हम आगे लिखेंगे, परन्तु तब तक हम योंही लिखते हैं कि मान लीजिये उसने सात ही लिया है।

आप०। (पहिले देखने वाले से) "हां कृपा कर यह तो कहिये कि आपने कौन सा ताश सोचा था।"

पहिला देखने वाला, "हुकुम की मेम।"

आप०। ( दूसरे देखने वाले से ) ठीक, और आपने कौन गिनती मन में लिया है।

दूसरा देखने वाला, "सात।"

आप०। अच्छा तो अब कृपा कर आप ही उस गड्डी को टेबुल पर से उठा लें और देखें कि हुकुम की मेम ठीक उसी गिनती पर है या नहीं जो आपने अपने मन में सोचा था, मैं दूर खड़ा हूं,



१२

ताशों के पास भी नहीं जाता।

जब वह देखेगा तो ठीक वह ताश वहीं निकलेगा और देखने वाले आश्चर्य से प्रसन्न हो चारो ओर से वह वाह की बौछार करने लगेंगे।

अच्छा अब जिन जिन आपत्तियों का होना इस खेल में सम्भव है हम उनके निवारण का भी उपाय लिख देते हैं। मान लीजिये कि हुकुम की मेम हो पहिले देखने वाले ने सोचा परन्तु दूसरे मनुष्य ने नम्बर सात न लेके एक या दस लिया तब आप कहिये, "हम तो पहिले ही कह चुके हैं कि एक और दस के बीच में कोई अंक लीजिये।" तब तो वह लाचार हो के कोई दूसरा ही अंक लेगा।

अब मान लीजिये कि कदाचित उसने दो, तीन चार या पांच लिया तो ऊपर जै ताशें उचित से अधिक हों उन्हें ऊपर से पास कर के नीचे ले जाइये और ऊपर उतनी ही रहने दीजिये जितनी दूसरे दर्शक ने अंक में बताया है।

यदि उसने छः कहा तो भी कुछ चिन्ता नहीं। आप उसके छः का मनमानता अर्थ लगा लें, अर्थात् छः ताश ऊपर से हटा दें और तब कहें कि छः तो हो चुका अब आपका ताश चाहिये बस वही सातवां दिखला दें, कोई भी आपकी यह उस्तादी न समझेगा।

जो उसने आठ या नौ कहा तो नीचे से एक या दो ताश ( समयानुसार ) पास करके ऊपर ले जाइये और बस फिर वही बात।

अच्छा अब दूसरी कठिनाई पर ध्यान दीजिये जो सचमुच बड़ी भारी बात है, मान लीजिये कि पहिले देखने वाले ने हुकुम की मेम न पहिचान के पान का दहला पहिचान लिया।

जब उसने पूछने से ताश का नाम बतलाया और दूसरे आदमी ने एक नम्बर कहा तो वही पहिले की भांति सब हिकमत लगा चलिये और समझिये कि मानो पान का दहला ही "सातवां" ताश है। जब हुकुम की मेम तक आइये तो उसे

निकाल कर टेबुल पर उलटा रखिये कि उसकी पीठ ऊपर रहे।

अब आप गड्डी लेकर दिखला चलिये और कहिये कि इसमें पान का दहला है ही नहीं। जब दहला दिखाई दे तो झट उसे ऊपर ले आइये जैसा पहिले कई जगह कह चुके हैं और यों कहिये कि "बस यही ताश जो टेबुल पर रक्खा है पान का दहला है लीजिये मैं दिखला भी देता हूँ।" इतना कह उस ताश को (हुकुम की मेम को) टेबुल पर से उठा पहिले देखने वाले के पास जा कर उस ताश को इस प्रकार दिखलाइये कि और कोई न देखे और यों कहिये कि "देखिये यही पान का दहला न आपने पहिचाना था?" बस इतना कह के लौटिये और उसी लौटान की समय ताश "बदल" डालिये, और आते ही उसे (अर्थात् पान के दहले को) टेबुल पर रख दीजिये। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि पहिला देखनेवाला स्वभावतः बोल ही उठेगा कि "आपने तो पान का दहला नहीं

दिखलाया परन्तु हुकुम की मेम दिखलाई थी।"

आप,"क्षमा कीजियेगा, आपको कुछ भ्रम हो गया होगा। मैंने तो आपको पान का दहला ही दिखलाया था।" पहला देखने वाला अपनी ही बात कहेगा और बस इतने ही भौंभौं में आप उस हुकुम की मेम को जो बदलने के कारण गड्डी में सब से उपर रह गई अंटियाय लीजिये और वेपरवाही से अपना हाथ जेब में डाल लीजिये, जैसे आप कुछ उसमें से निकालते हों और थोड़ी देर ( एक मिनिट भर ) हाथ वहीं रहने दीजिये।

तब आप कहिये,"क्षमा कीजियेगा, मैं फिर भी कहता हूँ कि कदाचित् आपको भ्रम हो गया हो। अस्तु मैं तो इसका पक्का प्रमाण दे सकता हूँ कि आपने हुकुम की मेम कभी न देखा होगा, क्योंकि

---

* यदि अंटियाये हुये ताश के रखने का समय हाथ न आवे तो पहिले ही से एक हुकुम की मेम अपने जेब में रक्खे रहिये।

मैं जानता हूं कि वह ताश ही दुष्ट है, प्रायः लोगों को धोखा हो जाता है, इस लिये मैंने खेल करने के पहिले ही उसे निकाल बाहर किया और अपने जेब में रख लिया था। पर अन्त को वही बात हुई। यह देखिये हुकुम की मेम तो यह है।" इतना कह उसे जेब में से निकाल कर लोगों को दिखला दीजिये और कहिये, "आप ही को भ्रम हुआ था, इसके लिये मैं यह ताश भी दिखला देता हूँ।" तब उस टेबुल वाले ताश को धीरे से उलट कर दिखा दीजिये, वह तो पान का दहला हई है, बस, आपका काम ख़तम।

## एकतीसवां खेल

हम इस पुस्तक के पहिले भाग में अपने पाठकों से यह प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि हम बाईसवें खेल की सहज युक्ति लिखेंगे सो अब लिखते हैं।

तमाम गड्डी को चारो रंगों में अलग अलग कर डालिये और एक्की से बादशाह तक सब को

क्रम से लगाइये। चारो गड्डियों को चार जगह रख के ताशों का मुंह ऊपर कर दीजिये और चारो में बादशाह सब से ऊपर रखिये। हुकुम वाली गड्डी के ऊपर पान की गड्डी रख दीजिये, उसके ऊपर चिड़िये की गड्डी और उसके ऊपर ईंट की गड्डी रखिये। जब यों तैयार हो जाय तो उसे टेबुल पर रख दीजिये। अब ईंट के बादशाह को उठा कर बायें हाथ में इस प्रकार रखिये कि उसका मुंह ऊपर रहे और इसी प्रकार ईंट की मेम को उसके ऊपर रखिये। तब नीचे से ईंट का बादशाह निकाल कर उसके ऊपर रखिये और गड्डी में से लेके ईंट के गुलाम को इस बादशाह पर रखिये, और फिर नीचे से ईंट की मेम निकाल कर गुलाम पर रख दीजिये। फिर ईंट का दहला इसके ऊपर रखिये और अब सब से नीचे वाला ताश (ईंट का बादशाह) निकाल कर इस दहले के ऊपर रखिये। योंही उठाते धरते और उलटते पुलटते इसी तरह चले चलिये जब तक कि टेबुल पर की गड्डी खतम

न हो जाय। जब इस तरह गड्डी तैयार हो जायगी तब आपको देख पड़ेगा कि सब के ऊपर ईंट का सत्ता है। बस अब खेल आरम्भ है।

गड्डी को टेवुल पर से उठा के बायें हाथ में लीजिये। एक ताश नीचे से निकाल कर गड्डी के ऊपर रखिये और एक्की टेवुल पर रख दीजिये, फिर दूसरा ताश नीचे से निकाल कर गड्डी में सब से ऊपर रखिये और दुक्की को टेवुल पर, योंही बराबर करने से सब ताश तरतीबवार आते जायंगे।

योंही चाहे जितने खेल अब बना लीजिये। कहां तक कहें, पाठकों से यह प्रार्थना है इस खेल को वे लोग किस्से की भांति न पढ़ जायं क्योंकि तब तो कुछ भी समझ न पड़ेगा। उन्हें चाहिये कि ताश को आगे रख कर जैसा लिखा है वैसा करते चलें तो धीरे धीरे सब समझ में आ जायगा।

# बत्तीसवां खेल

"बम्"

तीन आदमी ताश पहिचान कर गड्डी में मिला दें। आप एक एक ताश धीरे धीरे टेबुल पर रखते जाइये। जब कोई बस कह दे तो उसी ताश को उसका ताश बना देना

इस खेल को करने के लिये गड्डी भर में पांच ही प्रकार के ताश हों। जैसे सत्रह पान के बादशाह, सत्रह हुकुम के गुलाम, सोलह ईंट के दहले और एक पान का नहला और एक हुकुम का सत्ता।

गड्डी के नीचे तो सत्ता रहे और ऊपर नहला रहे, जिसमें देखने वालों को कुछ सन्देह न हो।

एक रङ्ग वाले सब ताश दूसरे रंग वालों से कुछ चौड़े रहें, जिसमें आपको छूने ही से मालूम पड़ जाय। बादशाह सब एक जगह रहें, गुलाम एक जगह और दहले सब एक जगह रहें।

देखने वालों के पास जाकर पहिले, दूसरे और तीसरे समूह में से पान का बादशाह, हुकुम का गुलाम और ईंट का दहला तीन मनुष्यों को हुक्मी झोंक से दीजिये और उन्हीं उन्हीं समूहों में फिर रखवा लीजिये। अब एक पान का बादशाह सब के ऊपर रखिये और उसके नीचे वही पान का नहला और उसके नीचे तो सोलह ताश (बादशाह) हुई हैं।

ऊपर वाले दोनों ताशों को यों उठाइये कि उनके कोने से कोने बराबर सटे हों कि जिसमें वे दोनों एक ही ताश जान पड़ें। इन्हें बेपरवाही से लोगों को दिखला दीजिये। सब यही समझेंगे कि हाथ में पान का नहला है। अब आप पहिले देखने वाले से कहिये :—

"हम इस टेबुल पर एक एक ताश रखते जाते हैं। आप की जब इच्छा हो तब रखते वक्त रोक दीजियेगा। जब आप रोकियेगा तभी आप का ताश निकल आवेगा।" इतना कह टेबुल से कुछ

दूर ( अनुमान एक गज़ के ) जा खड़े होइये और उन हाथ वाले दोनों ताशों को जिन्हें लोग एक समझते हैं गड्डी पर रख बांयें हाथ में लिये रहिये और ऊपर वाला ( पान का बादशाह ) उठा कर नीचे रखिये। देखने वाला तो यही समझता है कि यह पान का नहला है, उसी क्षण आपको छकाने के लिये बोल उठेगा, "बस।" तब आप कहिये कि "भला पहिले ही कहां से निकलेगा, आप ने तो देखही लिया था कि यह पान का नहला है, भला तब भी कुछ चिन्ता नहीं।" इतना कह उसे उलट कर दिखा दीजिये, वह बादशाह देखते ही बेवकूफ बन जायगा। यदि देखने वाले ने पहिले ही न रोका तो आप फेंट के उस पान के नहले को जो अब सबके ऊपर है सबके नीचे रख दीजिये और एक एक ताश को ऊपर से उठा के उसी बादशाह वाले समूह में नीचे रखते जाइये। जब वह बस कहे आप बादशाह निकाल के दिखा दीजिये।

जब उसका ताश निकाल चुकिये और दूसरे की पारी आवे, तब जितने पान के बादशाह ऊपर बचे हों हाथ से टटोल कर नीचे रख दीजिये और दूसरे आदमी का हुकुम का गुलाम निकालने के लिये तैयार हो जाइये। उसी तरह तीसरा भी निकालिये, बस सब दुरुस्त।

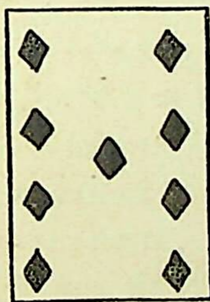
हम पुनः अपने पाठकों को सावधान कर देते हैं कि टेबुल से दूर खड़े हों और धीरे धीरे हाथ चलावें। ऐसा नहीं कि जल्दी करने से सत्तरह ताश निकल जायं, तब देखने वाला बस कहे। नहीं तो एक काम करिये, पहिले ही से देखने वाले से कह दीजिये कि "एक और पन्द्रह के भीतर ही बस कहियेगा।"

# तैंतीसवां खेल

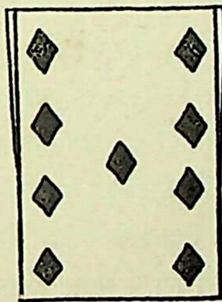
## गौदुमे ताश

देखने वाले तीन या चार ताश गड्डी में से निकाल कर पहिचान के मिला दें और अपने ही हाथ से फेंट भी डालें, तौभी उनके ताश एक ही बेर विना गड्डी को देखे निकाल देना

इस खेल को करने के लिये ताश वने हुये चाहियें जिन्हें "गौदुमे" ताश कहते हैं। अर्थात् ताश की गड्डी के सब ताश एक तरफ से इस प्रकार रेते हुये हों कि एक कोने पर दूसरे कोने की अपेक्षा कुछ अधिक चौड़े रहें, जैसे चित्र नम्बर ६ में हैं।



चित्र नंबर ६



चित्र नंबर ७



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

जब दो ताश इसी प्रकार के एक दूसरे के ऊपर रख दें और उनका झुकाव एक ही ओर न रहे, तो ऐसा दिखाई पड़ेगा जैसा चित्र नम्बर ७ में है।

अब ऐसी गड्डी को हाथ में लेकर सामने आइये और तीन चार देखने वालों को एक एक ताश निकाल लेने दीजिये। जब वे अपनी अपनी ताश देखने लगें, तब उस गड्डी को घुमा दीजिये, जिसमें जब वे ताश रक्खें जायं तो उनका सकरा भाग गड्डी के ताशों के चौड़े ओर हो। अब उन्हें फेंटने वास्ते दे दीजिये। वे चाहे जितना फेंट लें, उससे क्या होता है।

तब बांयें हाथ से गड्डी का एक कोना पकड़ के दाहिने हाथ को दूसरे कोने पर ले जाइये। वहां टटोलने ही से आपको तीन चार ताशों के कोने कुछ निकले हुये जान पड़ेंगे (जैसे चित्र नंबर ७ में हैं)। जब उन्हें खींचियेगा वे आपसे आप बाहर आजायंगे। ये ताश कितने निकले रहते हैं इन्हें

आंख से पहिचानना कठिन है, बस दाहिने हाथ की उंगलियां ही खूब पहिचानती हैं।

जिस समय ताशों को फेरने लगें तो किसी बहाने से फेरना चाहिये, नहीं तो आपकी चालाकी लोग जान जायंगे। सब से उत्तम यह है कि मंत्र पढ़ने के बहाने से किसी वस्तु के ऊपर से घुमा कर ठीक कर लिया।

अब इसके अन्तरगत हम कई खेल लिखते हैं जो पूर्णतया इससे हो सकते हैं।

### भिन्न भिन्न प्रकार से ताशों को निकालना

[ १ ] जब किसी ने कोई ताश पहिचान के इस गड्डी में रख दिया और आपने अपनी उंगलियों से टटोल कर उसे मालूम कर लिया कि वह कहां है, तो उसके दोनों कोने अंगूठे और बिचली उंगली में दबाइये और देखने वाले से कहिये कि एक, दो, तीन गिनिये। जब वह तीन कहे आप और सब ताशों को तनिक सा ढीला कर दीजिये।

सब आप से आप गिर जायंगे, केवल वही पहिचाना हुआ ताश हाथ में रह जायगा।

( २ ) दूसरी तरकीब यह है कि गड्डी किसी देखने वाले के जेब में रख कर उसका ताश निकालना। या तो वही हिकमत लगाइये या उस पहिचाने हुये ताश को गड्डी में सब के ऊपर ले आइये और फिर किसी के जेब रख के निकाल के दिखा दीजिये।

( ३ ) पहिचाने हुये ताश के दोनों कोने अंगूठे और बिचली अंगुली में दबा के बाकी ताशों को उछाल दीजिये। जब सब ताश गिरने लगें बीच में अपना हाथ भी घुसेड़ दीजिये। लोग यही समझेंगे कि आपने उस ताश को गिरते गिरते पकड़ लिया है।

# चौंतीसवां खेल

कोई आदमी किसी ताश को मन में सोच ले फिर वह जिस गिनती पर कहे उसी गिनती पर उस ताश को निकालना

यह खेल ३२ ताशों में होता है। ताश की गड्डी देखने वाले के हाथ में दीजिये और कहिये कि इसे खूब फेंट कर एक ताश पहिचान लीजिये, पर यह भी याद रखिये कि वह आरम्भ के ताश से पांचवीं, छठवीं, सातवीं या किस गिनती पर है। तब आप कहिये :—

"देखिये यद्यपि हमने आप से कुछ भी नहीं पूछा है, तथापि हमने आपका ताश जान लिया। अब जहां आप बतावें, अर्थात् जिस नम्बर पर आप कहें, हम उसी नम्बर पर उसे निकाल दें। परन्तु जिस नम्बर पर आपका ताश है उससे ऊंचा नम्बर कहिये।" माना कि देखने वाले ने नम्बर बारह कहा तब आप बेपरवाही से यों कहिये कि

"हमें ताशों के देखने की भी कुछ आवश्यकता नहीं है।" इतना कह गड्डी समेत दोनों हाथ टेबुल के नीचे ले जाइये और झट झट ऊंगलियों ही से १२ ताश * गिन कर नीचे से ऊपर गड्डी में रख दीजिये, तब कहिये:-

"अच्छा तो जहां पर रखना था पहले वहां पर आप का ताश रख दिया। अब आप कहिये कि आप का ताश किस गिनती पर था, इसमें कोई सन्देह की जगह नहीं है, क्योंकि अब हम ताशों को कुछ नहीं करेंगे और जहां से आप कहेंगे वहीं से गिनना आरम्भ कर देंगे।" माना कि उसने नम्बर ५ कहा, तो आप यों आरम्भ करिये कि सब से ऊपर वाले ताश को कहिये पांच, उसके आगे

---

* यदि कोई २४ कहे तो ऊपर से ताश गिन के झट नीचे रख दिया। इसमें जल्दी होगी, क्योंकि नीचे से २४ गिनने में देर लगेगी। पाठकों को चाहिये कि जहां जैसा सुभीता पड़े समझ लें।

छः फिर सात यों ही जब बारह तक आइये तब कहिये कि यही ताश आप का था। जब वह उसका नाम कहे तब उस ताश को उलट कर दिखा दीजिये।

## पैंतीसवां खेल

### ताशों को टटोल टटोल कर नाम बतलाते जाना

यद्यपि यह खेल पहिले भाग के पच्चीसवें खेल की पहेली के द्वारा हो सकता है, तथापि यदि कोई दूसरा मनुष्य ताश फेंट दे तो वह तरकीब बिगड़ जायगी। हम दूसरी युक्ति लिखते हैं जो बड़ी विचित्र है। हिकमत यह है कि अपने टेबुल या सन्दूक के ढकने में एक लम्बा शीशा लगाये रहिये जैसा कि प्रायः सिंगारदान में होता है। अब सन्दूक खोल कर उसमें से गड्डी निकालिये और ढकना खुला ही रहने दीजिये। पर ढकना ढीला न हो कि लोग शीशा देख लें। गड्डी किसी के हाथ में दे दीजिये

जब वह फेंट कर दे दे तो उसे यों रखिये कि ताशों का मुंह तो देखने वालों की ओर रहे और पीठ आपकी तरफ। तब सब से आगे वाले ताश को अंगुली से टटोलिये और एक निगाह झट से उड़ती सी शीशे में देख लीजिये। प्रतिबिम्ब से उसी क्षण जान पड़ेगा कि वह कौन सा ताश है, पर बहाना यही कीजिये कि अपनी अंगुलियों की सफाई से आप पहिचान लेते हैं। केवल चार ही पांच ताश इस युक्ति से बतलाना चाहिये। अधिक बतलाने से कदाचित् कोई यह भेद जान जाय।

## छत्तीसवां खेल

खूब फेंटी हुई गड्डी में से कोई मनुष्य अपने हाथ से एक ताश निकाल कर आपको दे दे तो टटोल कर उसका नाम बतला देना

जब फेंटी हुई गड्डी न हो और अपने ही हाथों में ताश लेकर खेल करना हो, तब तो पहिले भाग

के पच्चीसवें खेल की पहेली के अनुसार यह खेल करना सहज है। पर जब गड्डी फेंटी हुई हो तब बड़ी दिक़्क़त होगी। उस समय दूसरी हिकमत चाहिये। सो यह है कि ताश की गड्डी ऐसी हो कि उसके पीठ पर बुन्दीदार ठप्पा हो, फिर केवल एक बिन्दी को जरा सा मोटा कर देने से ताश पहिचाना जा सकता है। ताश को उलटा करके हाथ में खड़े खड़ लीजिये और बगल की तरफ़ पहिली दूसरी तीसरी या चौथी बिन्दी पर इक्की बादशाह, मेम, गुलाम इत्यादि सत्ते तक समझिये, और खड़े तरफ़ पहिली दूसरी तीसरी और चौथी बिन्दी से हुकुम, पान, चिड़िया तथा ईंट का रंग समझिये। पहिली वाली बिन्दी से तो ताश के नाम का पता लगेगा और दूसरे से रंग का, जैसे चित्र नम्बर ८ में है।

पहिले पहल तो यह बात कुछ कठिन जान पड़ेगी और समझ में न आवेगी, परन्तु जरा सो विशेष ध्यान देने से कुछ भी कठिनता न पड़ेगी।

चित्र में जो विन्दी दी है उसके देखने से जान पड़ेगा है कि वह विन्दी ठीक मेम के नीचे है और दूसरी ओर से ठीक पान के साम्हने जान पड़ती है। इससे यह स्पष्ट विदित हुआ कि वह पान की मेम है। योंही केवल एक विन्दी से ताश पहिचाना जाता है।

यह भी जानना चाहिये ताशों के दूसरे कोने पर भी ऐसाही चिन्ह चाहिये जिसमें चाहे ताश किसी बल रक्खा हो झट पहिचान लिया जाय।

| | एक्का | बादशाह | मेम | गुलाम | दहला | नहला | अट्ठा | सत्ता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हुकुम | | | | | | | | |
| पान | | | * | | | | | |
| चिड़िया | | | | | | | | |
| ईंट | | | | | | | | |

चित्र नं० ८



CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

# सैंतीसवां खेल

हम अपने पाठकों से प्रथम भाग में प्रतिज्ञा कर चुके हैं कि एक खेल दूसरे भाग में ऐसा लिखा जायगा कि चाहें कई आदमी एक एक ताश निकाल लें, पर जो जिस नम्बर पर कहे उसका ताश उसी नम्बर पर निकले।

जब तीन चार आदमी तीन या चार ताश निकाल लें तो आप नीचे से पांच या छः ताश के बाद अंगुली लगा कर यों पास करिये कि उन दोनों हिस्सों के मुंह सट जायं। अर्थात् दोनों तरफ ताश की पीठ ही ऊपर रहे। अब जिस तरफ पांच या छः ताश हैं उसी तरफ उन खींचे हुए ताशों को सब के ऊपर रखवा लीजिये फिर सब ताशों को जरा सरसरा के कहिये कि एक दो पास, ताश उड़ जा। बस इतना कहते ही हाथ ऊपर उठा गड्डी उलट दीजिये जिसमें पहिचाने हुये सब ताश नीचे की तरफ हो जायं। तब सब से

ऊपर वाला ताश उठा कर उस मनुष्य से कहिये जिसने सब के पीछे ताश गड्डी में रक्खा था कि "आपका ताश तो उड़ गया, अब जै नम्बर के बाद कहिये तै नम्बर के बाद आपका ताश निकले।" इतना कह वह ऊपर वाला ताश दिखला दीजिये कि जिसमें वह समझे कि सचमुच उसका ताश उड़ गया। मान लीजिये उसने कहा कि दस ताशों के बाद निकले। तब आप कहिये, "अच्छा दस के बाद, अर्थात् ग्यारहवां।" इतना कह झट झट एक एक ताश गिन गिन के टेबुल पर रखते जाइये। जब दस हो जायं तब कहिये, "हां कै हुआ, गिन तो डालिये।" बस उन्हें गिनने लग जाइये। प्रायः लोग उधर ही देखेंगे, बस इसी समय में सफाई से गड्डी उलट दीजिये और कहिये, "ठीक है, दस हो चुके, तो अब ग्यारहवां ताश आपका निकले।" इतना कह उस ऊपर वाले ताश को उलट के दिखा दीजिये। उसे देखते ही लोगों को बड़ा आश्चर्य होगा और

वाह ! वाह ! करने लगेंगे। जब तक वे अपनी वाह ! वाह ! में लगें तब तक झट फिर गड्डी उलट दीजिये और टेबुल वाले ताशों को उठा कर उस गड्डी पर रख लीजिये और बाकी आदमियों के ताश भी इसी प्रकार निकाल के दिखा दीजिये।

## अड़तीसवां खेल

### तीन ताशवाला खेल

यह अति उत्तम खेल है, परन्तु अब जादू के खेलों में से निकाल बाहर कर दिया गया है, क्योंकि प्रायः ठग जुआरी इससे दूसरों को धोखा दिया करते हैं। हम उसकी चालाकी यहां लिख देते हैं, जिसमें हमारे पाठकगण ऐसे धूर्तों के पंजे में न फंसें।

यह खेल मानों इस बात का सबूत है कि नेत्रों की अपेक्षा हाथ शीघ्र काम कर जाते हैं। तीन ताश ये होते हैं, एक तस्वीर और दो बूटी वाले

ताश। खेल करने वाला उन सभों का मुंह तो नीचे रखता है और पीठ ऊपर। एक तो वह बांयें हाथ के अंगूठे और दूसरी अंगुली के बीच पकड़ता है और बाकी दो को जिनमें तस्वीर वाला ताश भी रहता है दाहिने हाथ से इस प्रकार थामता है कि एक तो अंगूठे और पहिली अंगुली के बीच में रहे और दूसरा अंगूठे और दूसरी अंगुली के बीच में, (यह ताश पहिले वाले ताश के ऊपर रहता है)। दोनों हाथों को पास ही पास लाकर और झट हटा कर वह उन तीनों ताशों को जमीन पर पास ही पास बिछा देता है, और देखने वालों से तस्वीर वाले ताश को पहिचानने पर शर्त बदता है। इस खेल में चतुर से चतुर और होशियार से होशियार भी धोखा खा जाते हैं और निश्चय नहीं कह सकते कि पहिले उपर वाला ताश गिरा या नीचे वाला। यहां तक तो खेल हुआ, अब हम उसमें होने वाली चालाकी और धूर्तता भी लिख देते हैं।

खेल करने वाले के तीन चार साथी मिले रहते हैं जो पहिले पहिल दांव लगाना आरम्भ कर देते हैं और राह चलतों को अपने जाल में फंसाया चाहते हैं। खेल करने वाला जानबूझ के अपने साथियों से दो चार दांव हार जाता है। बीच बीच में एक आध जीत भी लेता है, जिसमें कोई सन्देह भी न करे। यों ही कुछ देर तक जब खेल चला और बहुत से देखने वाले जमा हो गये तब खेल करने वाला हारते हारते घबड़ा कर ऊपर नीचे देखने लगता है, इतने ही अवसर में उसके साथियों में से एक किसी देखने वाले की तरफ कनखी मार तसवीर वाले ताश का कोना जरा सा मोड़ देता है, मानो उसने यह पहिचान बना दी।

खेल करने वाला उन सब ताशों को उठा लेता है और अपना खेल आरम्भ कर देता है, मानों उसको उस बात की खबर ही नहीं। परन्तु फिर चुपके से उस तसवीर वाले ताश को तीसरी और

चौथी अंगुली के बीच दवा कर उस कोने को सीधा कर लेता है, और उसी हाथ वाले दूसरे ताश का एक कोना मोड़ देता है और पहिले की नाईं उन्हें फेंकता है। अब तो वह मुड़ा हुआ कोना स्पष्ट ही दिखाई देता है। देखने वाले तो यही समझते हैं कि यह मुड़ा हुआ ताश वही तस्वीर वाला ताश है, परन्तु उन्हें उस चालाकी की क्या खबर जो कि उन धूर्तों ने आपस में मिल के कर दी है। बस झट उस मुड़े हुये ताश पर दांव लगाते हैं और धोखे में फंस रुपया खो देते हैं।

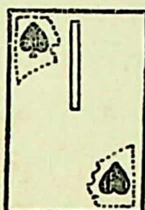
## उन्तालीसवां खेल

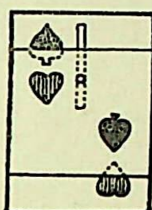
### हिकमती ताश का खेल

यह बना बनाया ताश बहुत बढ़ियां बढ़ियां तमाशे कर कर सकता है, जैसे हाथ के हाथ ही में रंग बदल जाना, ताश बदल जाना इत्यादि। एक नमूना हम दिखाते हैं कि हुकुम का बादशाह हाथ ही हाथ में पान का बादशाह हो जाय। इसमें

बादशाह वही का वही रहता है केवल टिप्पी बदल जाती है। तर्कीब इसकी यह है कि एक बादशाह लेकर उसकी दोनों टिप्पियें काट दीजिये जैसा चित्र नम्बर ९ में है।


चित्र
नंबर ९


चित्र
नंबर १०


चित्र
नंबर ११

इसके पीछे एक ताश और लगा दीजिये जिसके एक कोने में हुकुम की टिप्पी और दूसरे कोने में पान की टिप्पी बनी हो। ( चित्र नं० १० में देखिये ) एक छोटा टुकड़ा ताश का इसके भीतर रहता है जो एक आलपीन के सहारे ऊपर नीचे चढ़ता उतरता है। आलपीन से ऊपर नीचे चढ़ने उतरने के लिये पिछले ताश में एक लम्बा छेद

बना रहता है, जैसा चित्र नम्बर १० में हैं। बीचवाले टुकड़े में दो टिप्पियां रहती हैं, एक तरफ पान दूसरी तरफ हुकुम। उसके ऊपर नीचे खसकाने से टिप्पियें कैसे बदल जाती हैं यह चित्र नम्बर ११ में देखिये। जब आलपीन से इस टुकड़े को ऊपर खींच लिया तो ऊपर तो बीचवाले टुकड़े की पान की टिप्पी नीचेवाली हुकुम की टिप्पी को दबा लेगी, और ताश खासा पानका बादशाह जान पड़ेगा। अब बीच वाला टुकड़ा नीचे उतरेगा तो नीचे हुकुम की टिप्पी खुली आवेगी और फिर वही ताश हुकुम का बादशाह जान पड़ेगा।

इस हिकमती ताश के द्वारा कई उत्तम उत्तम खेल हो सकते हैं, जैसे–

( १ ) जब टीन की पेटी में से ताश निकलता हो तो वहां इससे काम लीजिये, जिसका हाल उन्चासवें खेल में लिखा है।

( २ ) दो ताश इसी प्रकार के अपने हाथों

में रखिये। एक में तो हुकुम का बादशाह और दूसरे में पान का बादशाह दिखाइये, और कहिये कि देखिये, हाथ ही हाथ में और देखते देखते दोनों हाथ के ताश अदल बदल हो जाते हैं। बस जरा सा हाथों को हिलाकर बीचवाले टुकड़े को एक में तो ऊपर और दूसरे में नीचे सरका दीजिये। ताश अदले बदले मालुम पड़ेंगे। पुनः एक बेर बदल कर उन्हें टेबुल में रख दीजिये।

# चालीसवां खेल

### हिकमती मेम

यह ताश भी बदलने के काम आता है पर इस में दूसरी हिकमत है। एक पान के दहले को ऐसा चीरिये कि साफ दो परत निकल आवे। पिछला फेंक दीजिये और टिप्पी वाला परत रख छोड़िये। अब एक चिड़िये की मेम लीजिये और इसे भी पैर की तरफ से चीरिये, मगर आधी ही दूर तक, दो टुकड़े न हो जायं। इस आधे परत में तो

पान के दहले को आधा साट दीजिये और आधा दहला चीरे हुये ताश के पीठ वाले परत पर चपकाइये अर्थात् उस ताश के बीचोबीच में एक पल्ला ऐसा निकल आवेगा जो दोनों तरफ मुड़ सके। एक तरफ मुड़ने से चिड़िये की मेम जान पड़ेगी और दूसरी तरफ मुड़ने से पान का दहला। इसके द्वारा भी पाठकगण बहुत से खेल कर सकते हैं। हम कहां तक गिनावें।

## एकतालीसवां खेल

गड्डी को एक दीवार पर फेंक देना, और ऐसा मन्त्र मारना कि पहिचाना हुआ ताश ही उसमें चिपक जाय। बाकी सब गिर पड़ें

एक बड़ी चोखी (नोकीली) छोटी सी आलपीन लीजिये और उसे टेबुल पर ऐसी जगह रखिये जहां कोई देख न सके। नोक उस आलपीन की ऊपर रहे। अब किसी आदमी से एक ताश खिंचवाइये। जब वह उसे पहिचान कर गड्डी में रख

दे तो तुरत पास करके उसे सब के ऊपर ले जाइये और अंटिया कर गड्डी देखने वाले को दे दीजिये कि वह उसे खूब फेंट डाले। जब वह ताश फेंट रहा हो तब तक अपना हाथ उस आलपीन पर धीरे से इस प्रकार ले जाइये कि वह आलपीन ताश के बीचोबीच में आ जाय। तब तनिक धीरे से दबा दीजिये जिसमें आलपीन जरा सा उसमें घुस जाय। जब गड्डी आपके हाथ में आवे तब आप अंटियाये हुये ताश को सब के ऊपर रख दीजिये और देखने वालों से कहिये कि "देखिये अब मन्त्र मारता हूं।" इतना कह किसी काठ के दर्वाजे या तख्तबन्दी के पास जा उससे दो तीन फुट दूर खड़े हो कर उस पर गड्डी को कुछ जोर से फेंकिये कि जिससे वह आलपीन काठ में घुस जाय। बस वह आलपीन वाला ताश तो वहीं चपक जायगा, बाकी सब गिर पड़ेंगे। इसमें कुछ थोड़े अभ्यास का काम है, क्योंकि यह कुछ मामूली बात नहीं है कि सब कोई यों हीं फेंक दें, और आलपीन उस

में धंस जाय। यदि इसमें अच्छा अभ्यास न हो तो हाथ में गड्डी ले तख्तबन्दी में सटा के मारना चाहिये। बात तो वही होगी पर लोगों का उतना आश्चर्य कदाचित् न हो।

यदि चिपचिपी मोम या गोंद आप किसी सफाई से ताश में लगा सकें तब तो वह पत्थर या चूने की दीवाल में भी चिपक जायगा।

## बयालीसवां खेल

### एक ताश को टेबुल पर खड़ा कर देना

किसी खेल को करते करते आप एक ताश गड्डी से निकाल कर और किसी आदमी को दे कर कहिये कि इसे टेबुल पर रख आइये। जब वह रख कर लौटे तो आप कहिये कि "नहीं साहब, यों मत रखिये, उसे टेबुल पर खड़ा कर दीजिये, जिसमें सब लोग देख सकें।" इतना सुन कर वह आश्चर्य से इधर उधर देखने लगेगा। तब आप कहिये कि "क्या आपको कुछ आश्चर्य

होता है, इससे सहज बात तो दुनियां भर में कुछ भी नहीं है। देखिये मैं इसे खड़ा कर देता हूँ।" इतना कह ताश को बायें हाथ से उठा कर दाहिने हाथ में ले लीजिये और उसे चट खड़ा कर दीजिये फिर उसे उठा कर देखने वालों को दे दीजिये कि वे लोग भली प्रकार देख लें।

तरकीब इसमें इतनी ही है कि दाहिने हाथ में एक टीन का टुकड़ा रहता है जिसके सहारे ताश खड़ा हो जाता है। यह टुकड़ा डेढ़ इंच लम्बा और करीब आध इंच चौड़ा होता है। लम्बाई का लगभग चौथाई भाग एक तरफ से थोड़ा मोड़ दिया जाता है। इतना मोड़ देना चाहिये कि उसके सहारे वह टुकड़ा टेबुल पर खड़ा हो सके। खड़ा होके वह गिर न पड़े इसके लिये उस मुड़े हुये भाग पर मोम से एक टुकड़ा सीसे का चिपकाया रहता है कि जिसमें उसके बोझ से यह खड़ा हो जाय। ताश को खड़ा करने के वक्त इसी के सहारे खड़ा कर दीजिये। इस टुकड़े को दाहिने हाथ

में छिपाये रहिये। छिपाने की हिकमत यह है कि लम्बा भाग पहिली दो अंगुलियों में रहे और छोटा भाग कानी अंगुली की तरफ मुड़ा रहे। बस इसी के सहारे खड़ा कर देना चाहिये, और जब ताश उठाइये तो फिर उसे उसी दाहिने हाथ में ठिकाने लगाइये।

## तैंतालीसवां खेल

### प्रेमी ताश

दो गड्डी नई खोल कर टेबुल पर रख देना और एक आदमी चुपके से अपनी इच्छानुसार दोनों गड्डियों में से एक एक ताश निकाल ले, पर दोनों ताश एकही निकलें

दो गड्डी ताश की नई लीजिये जो अभी खुली भी न हों। उन में से एक को तो प्रथम भाग के पचीसवें खेल की पहली के अनुसार लगा लीजिये। ताश उसके कागज में से खोलने की तरकीब यह है कि

किसी बरतन में पानी को रख गरम करिये। जब उसमें से भाफ उठने लगे तब बन्धी बन्धाई गड्डी को संड़सी या चिमटे से पकड़ भाफ़ में लिये रहिये, जब तक कि उसके बन्धन की लेई या गोंद पिघल न जाय। तब उसे धीरे से खोल ताशों को पहेली के अनुसार लगाकर फिर बन्द कर दीजिये, और दूसरी गड्डी को ज्यों की त्यों रहने दीजिये। तब दर्शकों से कहिये :—

"महाशय, यह अपूर्व खेल जो हम आप लोगों को दिखाने लगे हैं बड़ाही विचित्र है। इसका होना पूर्णतया ताशों के प्रेम पर निर्भर है। यह देखिये एक नई तहजद गड्डी है। अभी आप लोगों के सामने ही इसे खोलता हूँ, इसे आप लोग भली प्रकार देख लीजिये। (यह कह के ताश की बधी बन्धाई गड्डी उन्हें दे दीजिये) फिर उन से ले के उसे खोलिये और यों कहिये कि "इस में ५२ ताश हैं।" इतना कह झट एक कोने से दूसरे कोने तक ताशों को दिखला दीजिये, पर

उनका क्रम न बिगड़ने पावे,चाहे काट भी डालिये पर सावधानी से, फेंटिये मत, क्योंकि यह वही गड्डी है जो लगाई गई थी।

अब ताशों को एक लम्बी कतार में बिछा जाइये और देखने वालों में से किसी को कहिये कि "अपनी इच्छानुसार जहां से चाहिये एक ताश निकाल लीजिये।" जब वह एक ताश निकाल ले तब आप उस कतार को उठा लीजिये,पर ठहरिये, कैसे उठाइयेगा। पहिले तो वह एक कतार थी पर अब उसके दो हिस्से समझिये। पहिले उस भाग को उठाइयेगा जहां से वह एक ताश निकाला गया है। इस भाग को बायें हाथ में रखिये और इसके ऊपर बाकी के ताश रख दीजिये। अब सबसे नीचे वालेताश को देखते ही आपको मालूम हो जायगा कि कौन सा ताश निकाला गया है। जैसे यदि सब के नीचे हुकुम का नहला है तो पहेली के अनुसार जान पड़ा कि पान का पंजा निकाला गया है इस गड्डी को टेबुल के एक कोने पर रख दीजिये और

अब दूसरी गड्डी को खोलिये।

इस गड्डी को लिये हुये देखने वालों के सामने आइये और उन्हें दिखला कर कहिये कि "इसे भी आप लोग देख लीजिये, इसमें दो ताश एक रंग के नहीं हैं।" इस दिखाने से यह अभिप्राय है कि आपको मालूम हो जाय कि पान का पंजा कहां है। झट उसे सब के ऊपर ले आइये और अंटिया लीजिये। अब एक सुन्दर सा रंगीन पटरा लेकर उस पर बाकी के ५१ ताशों को बिछा दीजिये (पीठ ऊपर रहे), और जिस हाथ में ताश अंटियाये हों उसी की हथेली पर उस पटड़े को उठा लीजिये कि जिसमें कोई अंटियाने का सन्देह न करे। देखने वालों को बुलाइये कि वे लोग आकर चाहे जितने ताश पसन्द करते जायं, और अंगुली से छू छू कर अलग करते जायं। जितने अधिक पसन्द करने वाले होंगे उतना ही अधिक आश्चर्य इस खेल में होगा। यदि ऐसा कोई पटरा न मिले तो टेबुल ही पर ताशों को बिछा दीजिये। खैर जब

देखिये कि सात आठ ताश बचे हैं, तब उस पटड़े को दाहिने हाथ से बांये हाथ पर रखिये और दाहिने हाथ से उन बचे हुये ताशों को फैलाते वक्त अंटियाया हुआ ताश भी उन्हीं में मिला दीजिये, और तब फिर लोगों को ताश छूने के लिये कहिये। पर अब उस तरकीब को लगाइये जो हम पहिले भाग के ११ वें खेल में लिख चुके हैं। इस खेल में पान के पंजे को अपनी तरफ रखना चाहिये। जब वही एक ताश (पान का पंजा ) रह जाय तब किसी आदमी को पटरा थमा कुछ दूर जाकर सोच-मुद्रा से खड़े हो कहिये, "प्रथम तो इन महाशय ने एक ताश अपनी इच्छानुसार गड्डी में से ले लिया जो न मालूम क्या था, और यह भी आप लोगों ने देखा कि एक गड्डी ताश इस पटरे पर फैला दी गई थी। अनेक महाशयों ने अपनी अपनी इच्छानुसार ताशें पसन्द कर लीं। केवल एक ही ताश बचा है।" यह कौन ताश है किसी को नहीं मालूम। तथापि इन दोनों गड्डियों के ताश ऐसी

प्रेमी हैं कि जब एक बाहर निकलता है तब उसका दूसरा साथी भी उसका साथ देने को तैयार रहता है। अच्छा मैं दूर ही रहता हूं, आप ही देखिये कि वे दोनों क्या हैं।

जब लोग उन्हें उलटेंगे तो दोनों एक ही प्रकार के निकलेंगे। यद्यपि यह खेल हुक्मी झोंक द्वारा भी हो सकता है तथापि वह और बात है और यह और बात है। पाठकों से पुन: एक बार प्रार्थना है कि जहां अंटियाने का काम पड़े वहां छोटे ही ताशों से खेल किया जाय।

## चौंआलीसवां खेल

किसी गड्डी में में से चार ताश लोग पहिचान लें और चारों आदमियों का ताश एक ही हो

इस खेल को प्राय: तभी करना उत्तम होता है जब देखने वाले बहुत से हों। क्योंकि इसमें यह आवश्यकता है कि जिनसे जिनसे आप बात-

चीत करें वे लोग आपस में आपकी बात का मिलान न कर सकें। खैर यदि ऐसा न हो तौ भी यह खेल बड़ा अद्‌भुत है।

एक ताश गड्डी में से देखने वाले को इच्छानुसार निकाल लेने दीजिये।

इसे गड्डी में सब से ऊपर रखवा कर लोगों से कहिये कि "यही ताश है, लीजिये हम इसे टेबुल पर रख देते हैं।" रखती समय झट उसे बदल दीजिये और दूसरा ताश उलटा ही टेबुल पर रख दीजिये। लोग यही समझेंगे कि आपने पहिचाना ही हुआ ताश टेबुल पर रक्खा है।

बदल जाने के कारण से पहिचाना हुआ ताश गड्डी में सब के ऊपर रह गया। अब गड्डी काट कर उसे बीच में ले आइये और हुक्मी झोंक द्वारा किसी दूसरे आदमी को उसे दे दीजिये। मान लीजिये कि यह हुकुम का गुलाम है ।

जब वह पहिचान ले तो उससे उस ताश को लेकर उस टेबुल पर रखती समय बदल दीजिये

और दूसरा कोई ताश टेबुल पर उसी पहिले ताश के पास रख दीजिये।

फिर पहिले की नाईं किसी तीसरे आदमी को भी वही ताश (हुकुम का गुलाम) हुक्मी झोंक से दीजिये। जब वह पहिचान ले तब उससे ऊपर रखवा के बिना बदले टेबुल पर उन दो ताशों के पास रख दीजिये।

अब किसी चौथे आदमी को एक ताश उसकी इच्छानुसार खींच लेने दीजिये और उसे उसी के पास रहने दीजिये, मानो आप रखना भूल गये हों। अब उन टेबुल वाले तीनों ताशों को "पंखेनुमा" बनाकर जैसा पहिले भाग के खेल नम्बर १४ में है दिखाइये और कहिये कि यही तीनों ताश आपलोगों ने पहिचाना है। तीनों आदमी अपना ताश उसमें देख कर (क्योंकि सभों ने हुकुम का गुलाम ही पसन्द किया है) यही समझते हैं कि बाकी के दो ताश दूसरों के हैं।

तब चौथे आदमी के पास जाकर तीनों ताश

दिखला के कहिये, "क्यों साहब आप का ताश भी इसमें है?" वह निःसन्देह कहेगा कि "नहीं।" क्योंकि उस का ताश तो उसी के पास है।

तब आप कहिये, "ओहो, क्षमा कीजियेगा। मुझ से भूल हो गई थी, कृपाकर अपना ताश भी इसी पर रख दीजिये।" इतना कह आप इन तीनों ताशों को गड्डी पर (जो बांये हाथ में है) रख दीजिये, पर स्मरण रखिये कि हुकुम का गुलाम सब के ऊपर रहे और बदलने के लिये तनिक सा बढ़ाये तैयार भी रहिये।

अब चौथे आदमी का ताश उससे ले लीजिये। (माना कि ईंट का दहला है) और वेपरवाही से लोगों को दिखला भी दीजिये और झट हुकुम के गुलाम से बदल डालिये और इसे (हुकुम के गुलाम को) उलटा ही हाथ में लिये रहिये कि कोई देखने न पावे।

यदि आपको बदलना सफाई के साथ आता है तो कोई भी कभी सन्देह नहीं कर सकेगा कि

आपके हाथ में दूसरा ताश आ गया है। सब यही समझेंगे कि वही ईंट का दहला है। तब पहिले आदमी के पास जाकर कहिये कि "देखिये यह ईंट का दहला है जो उन महाशय ने खींचा था। मैं अपने मन्त्र के जोर से इसे उड़ा देता हूँ।" इतना कह कर एक कोना ताश का गड्डी से छुआ दीजिये और फिर उसे दिखला दीजिये कि वह उड़ गया है।

अब फिर ताश का मुंह नीचे कर लीजिये और दूसरे आदमी के पास जाकर कहिये कि "देखिये जरा सा कोना इस का गड्डी में लगाने ही से उनका ताश उड़ गया और आप का ताश हो गया।" इतना कह उन्हें वह ताश दिखला दीजिये।

तब तीसरे आदमी के पास जाइये और इसी तरह उसे भी दीजिये। इसमें कुछ भी कठिनता नहीं है क्योंकि अभी तक वह हुकुम का गुलाम ही है।

जब आप चौथे आदमी के पास जाने लगिये तो झट उसे फिर बदल दीजिये और ईंट का दहला हाथ में लेकर सब को दिखा कर कहिये कि "अब यह फिर आप ही का ताश है।" हम फिर भी कहते हैं कि यदि यह खेल सफाई से किया जाय तो दूसरा खेल इसके मुकाबले में कभी न ठहरेगा।

ताशों का बदलना उसी समय सफाई से हो सकता है जब कि आप एक किसी दर्शक से दूसरे दर्शक के पास जा रहे हों।

## पैंतालीसवां खेल

ताशों की दो ढेरियें लगा देना और पहिले ही से एक कागज पर लिख देना कि देखनेवाला कौन सा ढेर पसन्द करेगा

पहिले तो हम एक लड़कखेलवा लिख देते हैं, भारी खेल पीछे लिखेंगे। टेबुल पर दो ढेर उलटे ताशों के लगाइये। एक ढेर में तो सात

ताश रहें और दूसरे में चारों सत्ते।

अब पहिचानने वाले को सामने बुलाइये और उससे कहिये कि "हम आपके मन की बात जान गये। इन दोनों गड्डियों में से चाहे जिसे आप छूइये, हम पहिले ही से लिख देंगे कि आप फलानी गड्डी छूयेंगे।"

इतना कह एक कागज पर यह लिख दीजिये कि "सात वाली गड्डी।" अब वह चाहे जिस गड्डी को छूये आपकी बन पड़ती है। यदि बड़की गड्डी छूये तो आप कहिये कि "देखिये सात ताश वाली गड्डी छूआ न।" और जो छोटी गड्डी को छूये तो आप कहिये, "बस वही बात हुई, आपने वही ढेर छूआ जो हमने लिखा था।" इस जगह "सात वाली गड्डी" का यह अर्थ कर दीजिये कि "सत्तों वाली गड्डी।" पर इसके बाद दूसरे ढेर को दिखलाना न चाहिये। यह तो लड़कों का खिलवाड़ हुआ अब हम असली खेल लिखते हैं।

ताशों के दो ढेर टेबुल पर लगाइये जिनमें एक में आठ ताश हों और दूसरे में नौ, पर देखने वालों को न मालूम हो कि कै कै ताश हैं। तब आप कहिये कि "इन गड्डियों में से एक में तो ताक ताश हैं और दूसरे में जूस। हम आप लोगों को यह नहीं बतलाते कि इसमें ताक कौन और जूस कौन है, परन्तु यह पहिले ही से बतला देंगे कि आप कौन सी गड्डी छूइ-येगा। अच्छा तो अब की आप उस गड्डी को छूइयेगा जिसमें ताक ताश है।" जब तक आप ये बातें कर रहे हों तब तक समय आय नौ वाली गड्डी में से सब से ऊपर वाला ताश अंटिया लीजिये और तब गड्डी टेबुल पर रख दीजिये।

जब देखने वाले ने एक गड्डी छू दी, तब आप उसे दाहिने हाथ से उठा लीजिये और उठाती समय वह अंटियाया हुआ ताश उसके ऊपर रख दीजिये और गिनिये, बस नौ ताश निकलेंगे। तब दूसरा ढेर उठा लीजिये और उसे

भी गिन दिखाइये कि इसमें आठ ही ताश थे। फिर आप दोनों को मिला दीजिये और एक ताश अंटिया लीजिये और कहिये कि "अच्छा अब फिर दो ढेर इन्हीं ताशों का लगाते हैं। पर अब की बेर आप जूस वाला ढेर छूइयेगा।" एक ताश तो आप अंटिया ही चुके हैं, बाकी रहे सोलह, उनके दो ढेर आठ आठ के लगा दीजिये। जब देखने वाला एक ढेर छूये तो आप उससे कहिये कि गिनिये। जब वह गिनने लगे तब आप दूसरे ढेर को दाहिने हाथ में उठा लीजिये और अंटियाया हुआ ताश इसमें मिला दीजिये। देखने वाला जब अपने ढेर को गिनेगा तब जूस ही पावेगा। बस इस के उपरान्त आप दूसरा ढेर भी गिन कर ताक ताश दिखला दीजिये। इस खेल को ज्यादा न करना चाहिये।

# छिआलीसवां खेल

छः कतार छः छः ताशों की लगा देना और
एक पासे के फेंकने से बता देना कि पहिचाना
हुआ ताश किस जगह है

किसी आदमी को एक ताश उसकी इच्छानुसार छत्तीस ताशों की एक गड्डी में से निकाल लेने दीजिये। जब वह उसे पहिचान ले तो चाहे जहां गड्डी में रखवा लीजिये और तब ताशों को खूब फेंट डालिये। इसके बाद छः छः ताशों के छः कतार लगाइये, परन्तु ताशों का मुंह नीचे रखिये। अब एक पासा लेकर देखने वाले को दे दीजिये। इस पासे में एक से लेकर छः तक टिप्पियां बनी रहें। और उससे कहिये कि वह उसे घुमा कर जमीन पर फेंके। मान लीजिये कि पहिली वेर पांच गिरा, तब आप कहिये कि "अच्छा यह तो पांचवीं लाइन हुई, अब फिर फेंकिये।" मान लीजिये कि

दूसरी वेर छक्का गिरा, तब आप कहिये कि "अच्छा तो आप का ताश पांचवी लाइन में छठवां ठहरा। वहुत अच्छा कुछ चिन्ता नहीं। यह पासे की वदमाशी है जो हम को छकाया चाहता है।" इतना कह पांचवीं लाइन के छठें ताश को तो टेवुल ही पर रहने दीजिये और वाकी सब ताशों को उठा लीजिये। पर सावधान रहिये कि कोई सीधा न हो जाय। और देखने वाले से पूछिये कि "आपका कौन ताश था।" जब तक वह बतावे तव तक जिस हाथ में गड्डी है उस हाथ को वेपरवाही से टेवुल के नीचे कर लीजिये। उस वनी हुई गड्डी को छोड़ छत्तीस ताशों की दूसरी गड्डी दराज में से उठा के टेवुल पर रख दीजिये और मन्त्र की छड़ी से उस ताश को छू दीजिये और फिर उलट कर दिखा दीजिये कि वही पहिचाना हुआ ताश है या नहीं।

इस खेल में यह भेद है कि गड्डी के छत्तीसों

ताश सब एक ही रंग के होते हैं। बस पासे में चाहे जो पड़े, सर्वत्र आपकी ही बन पड़ेगी। गड्डी को इसी वास्ते बदल देना चाहिये कि जब कोई गड्डी देखना चाहे तो देख ले और अपना सन्देह मिटा ले।

ताशों की इसी बनी हुई गड्डी से यह खेल भी हो सकता है कि किसी आदमी के ऊपर मन्त्र की छड़ी घुमा के जादू कर देना। फिर वह जिस पट्टी का जो ताश कागज पर लिख दे उसी ताशको पहिचाना हुआ ताश बना देना। यह भी स्पष्ट ही है।

## सैंतालीसवां खेल

### चार एक्की से चार बादशाह और चार बादशाह से चार एक्की कर देना

यह विचित्र खेल चार ताशों की सहायता से हो सकता है, जो ऐसे बने रहते हैं कि एक तरफ तो चारो बादशाह हैं और दूसरी तरफ चारो एक्की।

इसका बनाना कुछ कठिन नहीं है। चार बादशाह और चार एक्की लीजिये और इन सभों को यों चीरिये कि एक के दो दो परत हो जायं। तरकीब चीरने की यह है कि किसी खूब तेज छूरी से एक ताश के कोने को जरा सा दो भाग में चीर दीजिये। फिर तो बाकी का बड़े ही सहज में हाथ से खींचने पर चिर जायगा। इसमें कुछ भी दिक्कत नहीं है, पाठकगण आजमा कर देखें। पर छूरी तेज होनी चाहिये।

जब इस प्रकार ताशों की मोटाई कम हो जाय तब एक एक बादशाह और एक एक एक्के को पीठो पीठ साट दीजिये और उन्हें जमीन पर एक के ऊपर एक रख के एक भारी पत्थर ऊपर से रख दीजिये जिसमें वे जरा सीधे हो जांय। चाहे बिना ताशों के चीरे ही बादशाह को एक्की पर साट दीजिये पर ताश दूने मोटे हो जायंगे, तनिक इतनी ही दिक्कत है। खैर अब इन चार ताशों को कहीं गड्डी में इस प्रकार रखिये कि एक्कियों का मुंह नीचे

रहे अर्थात् जब गड्डी सीधी कर के देखी जाय तो वे चारो एक्की जान पड़ें।

अब असली चार एक्कियों को गड्डी में सब से ऊपर रखिये, पर उनका मुंह नीचे रहे, और अब खेल इस तरह होगा।

गड्डी को अपने हाथ में इस प्रकार लीजिये कि ताशों का मुंह ऊपर रहे और यों कहिये कि "इस करने के लिये चार बादशाह और चार एक्कियों की अवश्यकता है।"

इतना कह चार बादशाह असली और चार बनी हुई इक्कियां गड्डी में से निकाल कर टेबुल पर रखिये, लेकिन कहीं ऊपर वाली असली चार इक्कियों का कोई न देखे, नहीं तो सभी भेद खुल जायगा।

तब आप कहिये कि देखिये ये चार बादशाह और ये चार इक्कियां हैं। बस इसी अवसर में चट गड्डी के ताशों को यों पास करिये कि आधो आध का मुंह से मुंह सट जाय। अर्थात् गड्डी के

दोनों तरफ ताश की पीठ ही दिखाई पड़े।

इस गड्डी के निचली तरफ असली चारो एक्कियों को रहना चाहिये। अब चारो असली बादशाहों को लोगों को दिखला के गड्डी में सब के ऊपर रखिये। फिर देखने वाले के हाथ में कोई रूमाल दे दीजिये और उन चार इक्कियों को लोगों को दिखलाइये और उससे कहिये कि इन्हें इस रूमाल से ढांक दीजिये। जब वे ढांकें तब झट उन्हें ( ताशों को ) उलट दीजिये।

तब गड्डी को हाथ में लेकर एक बेर पुनः चारो बादशाह दिखला दीजिये और फिर उन्हें वहीं रख कर कहिये कि "मैं अपने मन्त्र के जोर से इन चारों बादशाहों को रूमाल के नीचे भेज देता हूँ और उन चारों इक्कियों को गड्डी में बुला लेता हूँ।"

इतना कह अपनी मन्त्र की छड़ी झुक कर उठाइये और उसी जरा से झुकाव में गड्डी को उलट दीजिये फिर छड़ी ले कर जरा सा छू भी

दीजिये और यदि मन्त्र की छड़ी न हो तो "छू:" कह के हाथ जरा सा ऊपर उठाइये और गड्डी उलट दीजिये । बस अब गड्डी वाली चारो इक्कियां दिखला दीजिये और रूमाल के नीचे के चारो बादशाह भी देखने वालों के सामने कर दीजिये जब एक वेर यों हो चुके तो पुनः पहिले ही की नांईं उन्हें स्थान बदलाइये पर तीसरी वेर मत करिये, नहीं तो फिर अगर कोई ताशों को देखना चाहेगा तो दिक्कत पहुंचेगी ।

यह खेल इस तरह भी हो सकता है कि आठ ताश दोहरे बनाये जायं और उन्हीं को उलट पुलट कर के काम लिया जाय ।

## अड़तालीसवां खेल

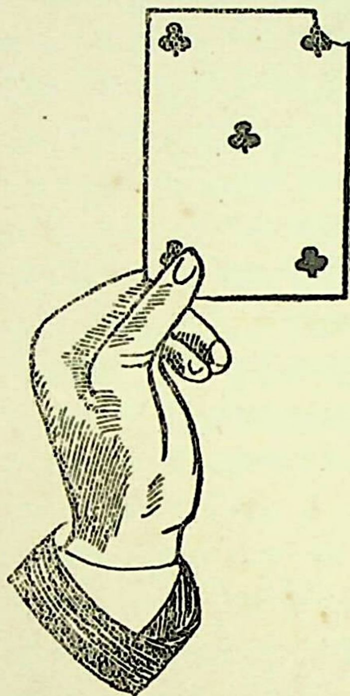
किसी ताश को फाड़ के जला डालना और फिर उसे साबुत कर दिखाना

यह बहुत ही बढ़ियां खेल है । पहिले आप गड्डी लीजिये और सब के सामने आकर एक ताश

खिंचवा दीजिये। देखने वाले से कहिये कि वह उसे खूब फाड़ डाले। जब उसने फाड़ फूड़ सब टुकड़े आपको दे दिये तो आप उन में से एक टुकड़ा उसे दे दीजिये और कहिये कि "इसे बड़ी हिफाजत से रखिये। इन्हीं टुकड़ों से हम फिर ताश को पूरा कर देते हैं।" बस सब टुकड़ों को जला दीजिये पर राख बचाये रहिये। अब "बदलने वाली सन्दूक" * को ले आइये और सब को दिखला दीजिये कि वह खाली है। फिर उसे टेबुल पर रख कर बन्द कर दीजिये और जली हुई राख लेकर उसके ऊपर रखिये और मन्त्र की छड़ी मार के फूंक दीजिये। राख तो उड़ जायगी। जब आप सन्दूक खोलियेगा तो वह ताश समूचा निकल आवेगा। पर वही टुकड़ा कमती रहेगा जो देखने वाले के हाथ में है। अब इस टुकड़े को दाहिने हाथ में लेकर और ताश बायें हाथ में रख के ( जैसा चित्र नं० १२

---

* इसका हाल आगे लिखा है।



चित्र नंबर १२

में है ) आप खड़े हो जाइये। जब टुकड़े को बांयें हाथ वाले ताश की तरफ फेंकियेगा तो वह बीच

ही में गुम हो जायगा। पर ताश समूचे का समूचा दिखाई देगा। कोई कोई तमाशा करने वाले जान बूझ कर उस टुकड़े को पृथ्वी पर गिरा देते हैं और जब ताश अधूरा सन्दूक में से निकलता है तब बड़ा घबड़ा कर इधर उधर ढूंढ़ने लगते हैं, अन्त में पृथ्वी पर से उस टुकड़े को उठा यथापूर्व जोड़ देते हैं।

पाठकों को तो विदित हो गया होगा कि जो ताश फाड़ा गया है वह हुक्मी झोंक द्वारा दिया गया था, और जो सन्दूक में से निकला वह उसी में था। इसका हाल हम इस खेल के अन्त में लिख देंगे। अब रहा उस टुकड़े का जुड़ जाना सो हम लिखते हैं। एक टुकड़ा टीन का पत्तर उतना ही बड़ा लीजिये ठीक जितना बड़ा ताश होता है। अब उसके एक कोने पर से एक टुकड़ा इतना बड़ा काट डालिये कि उसकी लम्बाई तो एक इंच हो और चौड़ाई अनुमान आध इंच हो। अब दो टुकड़े हो गये, अच्छा, छोटा टुकड़ा एक कमानी

के जोर से बड़े टुकड़े में इस प्रकार लगाइये कि वह उसके पीछे मुड़ भी जाय और जब तक कमानी को अंगुली दबाये रहे तब तक तो वह जोर न कर सके और न छोटे टुकड़े को बड़े टुकड़े के सामने आने दे और जब कमानी छोड़ दी जाय तो छोटा टुकड़ा बड़े टुकड़े के सामने आ के उसे पूरा ताश बना ले। फिर किसी ताश को यों चीरिये कि उसकी दो परतें निकल आवें और मुटाई ताश की कम हो जाय। इस ताश में से एक कोना काट लीजिये जो कि छोटे टुकड़े से कुछ छोटा हो और इसे उस टीन के छोटे टुकड़े पर यों चपकाइये कि जब वह बड़े टुकड़े के सामने आ जाय तो समूचा ताश जान पड़े। और जब पीछे मोड़ दिया जाय तो ताश कटी हुई जान पड़े। जब यह ताश मोड़ कर बदलने वाले सन्दूक में रक्खा जाय तो उसका मुंह ऊपर रहे, जिसमें उसकी पीठ कोई न देखे, और कमानी दबी रहने की यह तरकीब है कि एक टुकड़ा टीन का

लम्बोलम्ब कमानी पर चढ़ता उतरता बना रहे। जब कमानी छोड़ना हुआ तब इस टुकड़े को अंगुली से सरका कर नीचे उतार लेना चाहिये।

उस टुकड़े को यों गायब करना चाहिये कि उसे दाहिने हाथ की बिचली अंगुली और अंगूठे के बीच पकड़िये और उसे फेंकने के लिये बायें हाथ की तरफ ले चलिये परन्तु बीच ही से उसे अंगूठे से सरका कर अंगुलियों के बीच में रोक लीजिये और झूठे ही बायें हाथ वाले ताश के ऊपर फेंकने का इशारा कर दीजिये। उधर तो ताश समूचा हो जायगा, इधर आप उस टुकड़े को जेब में धीरे से रख लीजिये। लोग आश्चर्य में आ जायंगे।

रहा सन्दूक का हाल सो भी सुनिये—यह सन्दूक कोई बाहर से तो ४ इंच लम्बा, ३ इंच चौड़ा और १ इंच गहरा होता है और अन्दर उसके इतनी जगह होती है कि ताश की एक गड्डी अच्छी तरह आ जाय। इस सन्दूक से कई खेल हो सकते

हैं। इसका पेंदी और ढकना दोनों एक रंग रहता है और ऐसा होता है कि जब खोल दिया जाय तो पुस्तक की नाईं टेबुल पर पड़ा रहे। चाहे जिस तरफ चाहा ऊपर उलट कर खोल लिया। इसके भीतर बीचोबीच में सन्दूक की लम्बाई चौड़ाई के बराबर एक टुकड़ा ठीक इतना बड़ा लगा होता है कि जिसमें वह सन्दूक में सट के बैठे। यह दोनों तरफ एक रंग रहता है, और सन्दूक के असल पेंदे के ऊपर नकली पेंदा बनाये पड़ा रहता है। बस सन्दूक में ताश रख के उसे बन्द करिये और साथ ही उसे उलट भी दीजिये। लकड़ी का वह टुकड़ा उस ताश के ऊपर आ गिरेगा और सन्दूक का पेंदा बन जायगा। बस सन्दूक खोलने पर ताश गायब हो जायगा। यदि दूसरी ओर कोई बना हुआ ताश रक्खा हो तो वह निकल आवेगा।

# उनचासवां खेल

### पहिचाने हुये ताश का नाम लेकर पुकारने से वह सन्दूक या खाने के बाहर आप से निकल आवे

यह खेल अत्यन्त ही विचित्र, अद्भुत और हास्यप्रद है। इसमें दो चार बातें हंसी दिल्लगी की होने से बड़ा कौतुक और आनन्द होता है। पाठकों को स्मरण रखना चाहिये कि ऐसे ऐसे खेल तमाशे करने वाले को बातें ही तो विशेष चमत्कारी कर देती हैं। यद्यपि वह कोरी बकवाद ही होती है तथापि खेल का रस चौगुना बढ़ जाता है और उसी के अभाव से वह खेल नीरस और ठूठा पत्रहीन वृक्ष की नाईं रह जाता है। इस कारण हम इस खेल को कुछ बढ़ा के लिखेंगे। पाठक धैर्य्य पूर्वक इसे पढ़ें।

इस खेल को करने के लिये केवल एक चौकोर पीतल या टीन की पेटी किसी सुन्दर लम्बे

लकड़ी के बैठके पर जड़ी रहना चाहियें। पेटी इतनी लम्बी चौड़ी हो कि जिसमें एक गड्डी ताश भली प्रकार खड़े खड़े आ जाय। ऊपर से ताश रखने के लिये इस पेटी का ऊपरी हिस्सा खुला भी रहे। आगे से भी लोगों को ताश दिखलाई पड़ने के लिये खुला रहे परन्तु कोने जरा जरा मुड़े रहें कि जिसमें सब तास गिर न पड़ें। (जब अगला भाग खुला रहे तब इस पेटी में दो भाग रखने चाहियें।) इस पेटी को किसी सुन्दर बैठकी पर पृथ्वी से गज भर या डेढ़ गज ऊंचे रखिये।

बनावट और सजावट—इस खेल में एक-मुंहे ताश * होने चाहियें, जिसका कारण हम आगे लिखेंगे।

---

* प्रायः ऐसे ताश पाये जाते हैं कि तस्वीरों को दो सिर होते हैं, एक नीचे और एक ऊपर। ऐसे ताश न होने चाहियें।

पहिले पांच ताश लीजिये, जैसे पान का दहला, पान की मेम, हुकुम का सत्ता ( बना हुआ ), हुकुम का गुलाम दो।

हुकुम के सत्ते और हुकुम के गुलाम में कुछ बनावट चाहिये सो यों है कि सत्ते पर तो जरा सी मोम से एक टिप्पी हुकुम की यों चिपकाये रहिये कि वह अट्ठा जान पड़े और हुकुम के गुलाम के निचले हिस्से के कागज को यों चीरिये कि वहां से दो परतें निकलें। उनके बीच में एक टीन का पत्तर रख के फिर जोड़ दीजिये, जिसमें वह तनिक भारी हो जाय। इससे जो खेल होगा वह हम आगे लिखेंगे।

ताशों की लगावट—एक लम्बा काला तागा या नख लीजिये। अगर वह सुफेद हो तो स्याही से काला कर लेना चाहिये। उसके एक कोने पर गांठ लगा दीजिये, एक गांठ से काम न चले तो दो तीन गांठें लगा दीजिये। टीन वाले गुलाम के निचले तरफ कैंची से जरा सा काट कर तागे को

उसमें डाल कर खींच लीजिये। गांठ आने पर तागा अटक ही जायगा।

( १ ) अब इस गुलाम को बांयें हाथ में लेकर उस तागे को उसकी पीठ पर से ऊपर ले चलिये।

( २ ) इसके ऊपर कोई दो तीन ताश रख दीजिये।

( ३ ) उस तागे को इन ताशों की पीठ पर से उतार लाइये और तब उसके ( तागे के ) ऊपर दूसरा हुकुम का गुलाम रखिये पर इस गुलाम का सिर नीचे और पांव ऊपर रहे।

( ४ ) अब तागे को फिर ऊपर ले चलिये और उसके ऊपर दो तीन ताशें रख दीजिये।

( ५ ) फिर उसे पहिले की तरह इन ताशों की पीठ पर से नीचे उतार लाइये।

( ६ ) अब बना हुआ अड्डा रख के तागे को पहिले की तरह ऊपर नीचे घुमा पान की मेम

को रखिये। फिर तागे को ऊपर नीचे करके पान का दहला रख दीजिये और उसी तरह बीच में ताश रखते जाइये।

(७) अब उस तागे को दहले की पीठ पर से ऊपर ले जाइये और उस पर तीन चार ताश और रख के तागे को नीचे उतार लाइये।

पाठकों को स्पष्ट विदित है कि बीच बीच में तीन चार ताश दूसरे रखने से क्या प्रयोजन है। इससे यह अभिप्राय है कि जब तागा खींचा जायगा तभी इन ताशों के ऊपर हो कर चलेगा और पहिचाने हुये ताश को साथ ही लेता आवेगा। खैर जब इस प्रकार ताश लगा लिये गये तब उन्हें उस टीन वाली पेटी के निचले हिस्से में रख दीजिये।

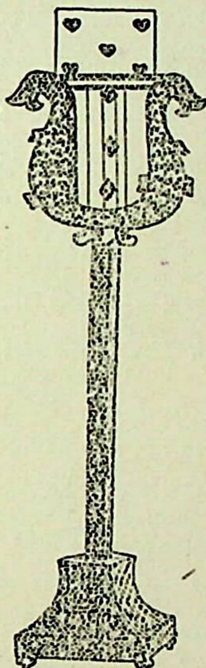
अब आप ठीक वैसी ही एक गड्डी में से उन्हीं चार ताशों को अर्थात् पान का दहला पान की मेम, हुकुम का सत्ता, और हुकुम का

गुलाम हुक्मी झोंक द्वारा देखने वाले को चिन्हाइयें फिर उन्हें गड्डी में रखवा के फेरफार उस टीन वाली पेटी के अगले भाग में रख दीजिये कि जहां से देखने वाले उन्हें देखा करें।

यहां तक तो यह हुआ अब बाकी हाल सुनिये कि उस तागे का दूसरा भाग आप का एक साथी पर्दे के भीतर से पकड़े रहे या किसी ऐसी जगह बैठा रहे कि देखने वाले उसे न देख सकें और वह बाहर की सब बातें सुनता रहे। अब इसके आगे आपका काम चला। जिसने पान का दहला खींचा है उसकी तरफ मुंह करके आप कहिये, "क्यों भाई, आपका ताश क्या है?" वह कहेगा, "पान का दहला।"

आप कहिये, "अच्छा अब हम अपनी आज्ञा से उस ताश को गड्डी में से निकालते हैं। आप सब लोग ध्यान रखिये। दहले निकल!" पर ताश न निकले। तब आप अपनी मन्त्र की छड़ी उस गड्डी पर से घुमा दीजिये। पर जब वह भी निष्फल हो जाय तब आप कहिये, "ओः हो, अब जान पड़ा, यह

हमारी भूल थी। ताश विचारे का क्या दोष है। हमने कहा था कि दहले निकल! तो भला कहिये कौन सा दहला निकले। अब हम उसका पूरा नाम ले के पुकारेंगे। पान के दहले निकलो!" तब धीरे २ पान का दहला उसमें से निकले (चित्र १३ वां देखिये) उसे दो अंगुली से बाहर निकाल देखने वालों को दे दीजिये।



चित्र नंबर १३

अब मेम की पारी आई। पुकारने वाला निकल निकल करके लाख सिर पीट मरे पर मेम न निकलेगी।

तब आप मानो घबड़ा कर दर्शक से कहिये, "क्षमा कीजिये, आपने कौन ताश खींचा था?"

देखने वाला—"हमने तो पान की बेगम ली थी।"

आप, "बेगम ! तभी आप बेगम बैठे थे। पहिले क्यों नहीं कहा। हम ने कहा, क्या कारण है कि आप का ताश नहीं निकल रहा है। पहिले तो यही कठिन है कि इतनी भारी सभा में मेम साहब लज्जा परित्याग करके आवें, दूसरे अपने जरा हुकुम से पुकारा इसी कारण बेगम साहब रूस गईं। तो मैं अब उन्हें आदर पूर्वक बुलाता हूँ, और वे निःसन्देह आवेंगी। श्रीमती अपने दर्शनों से हम लोगों के नेत्रों को कृतार्थ करें !" इतना कहते ही ताश निकल आवेगा और लोग हंस पड़ेंगे।

अब तीसरे ताश का नाम पूछिये। देखने वाला जब हुकुम का सत्ता कहे तब आप बेपरवाही से ऐसी जगह जा खड़े होइये जहां से आपको ताशों का मुंह न देख पड़े। अब सत्ते को आज्ञा दीजिये कि निकल। पर निकलेगा अट्ठा ! आप ऐसा मुंह बनाये रहिये मानो आपको खबर ही नहीं कि अट्ठा निकला है। जब ताश निकले तो उसे

लेकर लोगों को दिखला कर कहिये, "देखा आपने, आज तक हमारे खेल में कभी भूल हुई ही नहीं, यह हुकुम का सत्ता है।"

देखने वालों में से दस बीस आपको भूल समझ के झट बोल उठेंगे, "नहीं नहीं, यह तो हुकुम का अट्ठा है।"

तब ताश का मुंह अपनी ओर करके टिप्पी छुड़ा लीजिये ( पर गिरने न पावे ) और यह कहते जाइये कि, "क्या कहा, अट्ठा न आप को चाहिये ! यह हमारी भूल थी। हमने जाना आप सत्ता मांगते हैं।" देखने वाला कहेगा, "हां हां ठीक, हमने सत्ता ही कहा था, पर आपने तो अट्ठा निकाला।"

तब आप ताश उसे दिखला के कहिये, "क्या कहा, आपको अट्ठा चाहिये ? कदाचित् आप ही भूल गये होंगे।"

जब वे देखेंगे कि हुकुम का सत्ता ही है और आपने कहीं हाथ भी नहीं हिलाया है, तब तो

खिसियाय कर चुप हो अपनी भूल समझ हंस पड़ेंगे।

जब चौथे आदमी ने गुलाम का नाम बतलाया तो आप कहिये कि "अपने ताश को पुकारिये कि-निकल ये गुलाम!" जब वह यों पुकारे तब गुलाम ऊपर को पांव किये हुये निकलेगा। तब आप उस पर बड़े क्रोधित हो फिर सोच के कहिये कि "नहीं यह न्याय का जमाना है, जैसा कहियेगा वैसा सुनियेगा। इस कारण जाने दीजिये, आज कल के नौकर चाकर बहुत बिगड़ गये हैं। यों पुकारिये कि–आओ भाई गुलाम!" तब आप उस को निकालकर उलटा ही फिर गड्डी में झोंक दीजिये। पर ऐसी जगह रखिये कि फिर न निकले, याने सब के पीछे।

जब देखने वाला फिर उसे बुलावेगा तो वह फिर सीधा निकलेगा पर वस्तुतः यह वह नहीं है, यह तो टीन वाला दूसरा गुलाम है। जब वह निकले तब आप कहिये कि "अच्छा इस गुस्ताखी के लिये

यह दण्ड है कि सब साहबों को सलाम करो। इस पर वह ताश दो तीन वेर उठे और बैठे। तब आप कहिये, "अच्छा अब इन महाशयों को नाच दिखा कर प्रसन्न करो और अन्त को पैरों पर पड़ के अपराध क्षमा कराओ।" तब वह ताश नाचने लगे और अन्त को कूद के बाहर चला आवे।

पाठकों को जानना चाहिये कि ताश का निकालना या न निकालना आपके साथी के आधीन है। कोई कठिन बात नहीं है।

यदि पेटी दोहरी होगी तो फिर तमाशा देखने वाले उसे हाथ में लेकर आजमा नहीं सकते, अतएव एकहरी ही रखना चाहिये और आगे से खुली न रहे। बस किसी बात की दिक्क़त न पड़ेगी।

इस खेल में यदि उस बादशाह से भी काम लिया जाय जिसका हाल १४ वें खेल में लिखा है तो और भी तमाशा हो। गुलाम का नाचना तो पाठकों ने समझ ही लिया होगा, जब तागा ढीला पड़ेगा, टीन के भारीपन से आप ही गुलाम

नीचे सरक जायगा और फिर खींचने से निकल आवेगा ।

यह खेल जानबूझ के इतने विस्तार से इस कारण लिखा गया है कि पाठकों को भली प्रकार समझ में आ जाय और दूसरी बात यह भी है कि यदि हम केवल इतना ही लिख दें कि चतुराई से भांति भांति की दिल्लगी करते जाइये तो उतना आनन्द नहीं आवेगा । पाठकों को कुछ समझा देना चाहिये । जहां तक हमारी बुद्धि थी हमने लिखा । पाठकगण और भी इससे बढ़ा सकते हैं ।

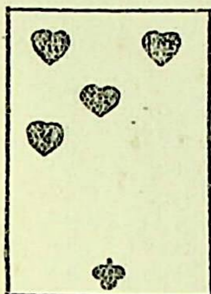
## पचासवां खेल

### खेलों का सिरताज

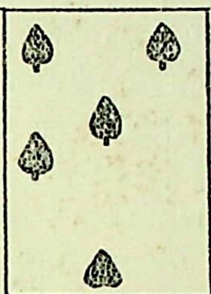
चार ताशों का विचित्र प्रकार से हाथ ही हाथ में रङ्ग बदलना । अट्ठों से दुक्की और लाल से काला हो जाना

इस खेल की प्रशंसा करना व्यर्थ है । पाठकों को आप ही जान पड़ेगा कि यह कैसा अद्भुत

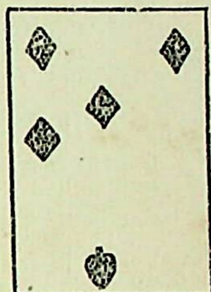
खेल है, अत्यन्त चतुर पुरुषों की भी बुद्धि इसमें चकराती है।



चित्र नंबर १४



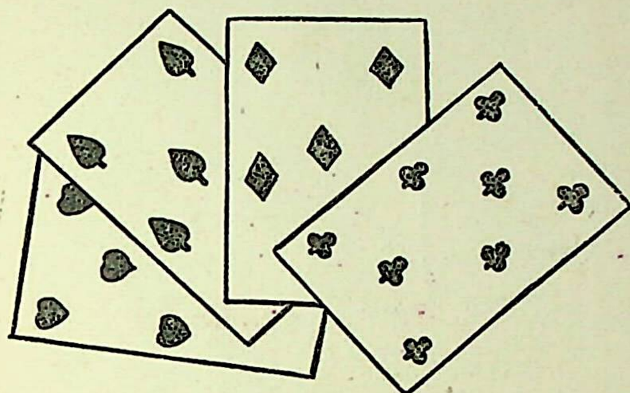
चित्र नंबर १५



चित्र नंबर १६

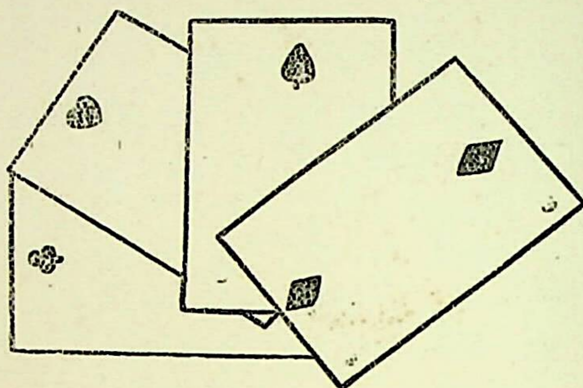
यह खेल पांच ताशों में होता है। एक असली अट्ठा और एक दुक्की और तीन ताश ऐसे बने हुये जैसे चित्र नम्बर १४, १५, और १६ में लिखे हैं। इन तीन ताशों को आप गड्डी में सब से नीचे रखिये और लोगों से कहिये कि "हम आप लोगों को एक विचित्र खेल चार अट्ठे और एक दुक्की से दिखलावेंगे।" यह कह कर चार अट्ठे गड्डी में से

निकाल लोगों को दे दीजिये कि वे उन्हें भली प्रकार देख लें। जब तक वे लोग ताश देखें तब तक आप अपने बांये हाथ की छोटी अंगुली उन तीनों बने हुये ताशों के ऊपर ले जाइये। अब अट्ठों को देखने वालों से ले लीजिये और उन्हें गड्डी में ऊपर रखिये, परन्तु चिड़िये के अट्ठे को सब से ऊपर रखिये। अब ईंट की दुक्की को भी देखने वास्ते दे दीजिये। जब तक वे लोग उसे देखें तब तक उन तीन बने हुये ताशों को पास करके ऊपर ले जाइये और ईंट की दुक्की देखने वालों से लेकर टेबुल पर रखिये। अब ऊपर वाले चारो ताश उठाइये और उन्हें लोगों को इस प्रकार दिखाइये कि वे चारो अट्ठे जान पड़ें, जैसे चित्र नम्बर १७ में देखिये।



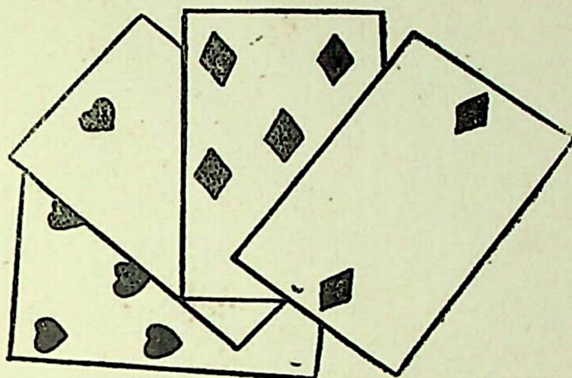
चित्र नंबर १७

अब चिड़िये के अट्ठे को तो टेबुल पर रख दीजिये और ईंट की दुक्की उठा लीजिये और तब उन्हें फैलाकर यों दिखलाइये जैसे चित्र नम्बर १८ में है और कहिये कि "देखिये चारो दुक्की हो



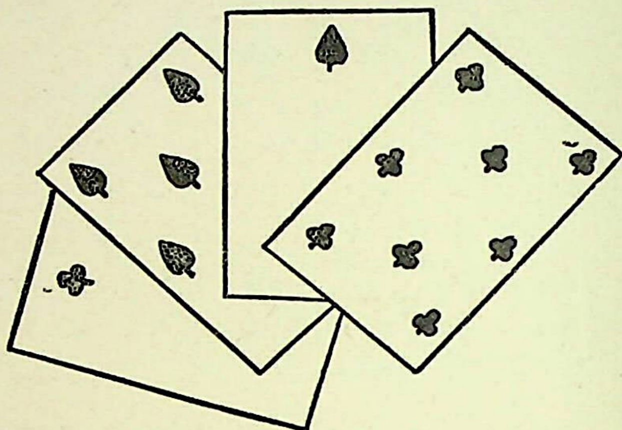
चित्र नंबर १८

गईं, इसमें दो काली और दो लाल हैं !" इतना कह दो काले ताशों का घुमा दीजिये और पुन: खोल कर उन्हें दिखाइये जैसा चित्र नंबर १६ में है और वे सब लाल ही लाल देख पड़ेंगे। अब ईंट



चित्र नंबर १९

की दुक्की को टेबुल पर रख दीजिये और अट्ठे को उठाइये और पुनः उन्हें फैला कर दिखलाइये जैसा चित्र नम्बर २० में, है वे सब काले ही काले दिखाई पड़ेंगे।



चित्र नंबर २०

अब पुनः उनमें से दो ताशों को घुमा दीजिये और दिखाइये जैसा चित्र नम्बर १७ में है और कहिये कि देखिये फिर वही चार अट्ठे के अट्ठे और वही एक दुक्की टेबुल पर पड़ी है।

इस खेल में ताश घुमाने का काम प्रायः पड़ता है, पाठकों को चाहिये कि ताशों को इस प्रकार घुमावें कि कोई भी इस भेद को न जाने। बस उत्तम रीति तो यह है कि मन्त्र मारने के बहाने किसी चीज पर से घुमा कर ठीक कर लेना।

यद्यपि हम पच्चीस खेल से अधिक ही लिख चुके हैं, तथापि यहां भी हम बहुत से ऐसे खेल लिख देते हैं कि जिनसे पाठकों को कुछ और भी मनोरंजन हो। ये खेल सब हुक्मी झोंक और प्रथम भाग के पच्चीसवें खेल की पहेली जानने वालों को सहज हैं, इसी लिये हमने इनकी गिनती भारी खेलों में नहीं किया।

## हुक्मी झोंक के खेल

(१) जिन ताशों को आप खिंचवाइये उन सब ताशों का नाम कोई लड़का कोठरी में से कहता जाय। लड़के को केवल इतना ही मालूम होना चाहिये कि पहले से आरम्भ करके कौन

ताश हुक्मी झोंक द्वारा दिया जायगा। बस इसके बाद सब सहज है।

(२) ताश खींचे जाने के पहले ही उसका नाम कागज पर लिख देना।

(३) जो ताश खींचा जाय उसका नाम आप से आप एक कोरे कागज पर आंच दिखाने से उभड़ आवे। जिस ताश को हुक्मी झोंक से देना हो उसका नाम नीबू या प्याज के रस से कागज पर लिख दीजिये, फिर आंच दिखाने से आप ही उभड़ आवेगा।

(४) खेल करने वाला और उसका साथी दो मनुष्यों को अलग अलग ताश खिंचावें, पर दोनों एकही रंग का ताश खींचें। स्पष्ट है।

(५) दो मनुष्यों को ताश खिंचवा कर गड्डी में मिलाकर फिर खिंचाने से एक दूसरे का ताश खींच ले।

(६) दस या बारह मनुष्य ताश खींच कर

गड्डी में मिलाते जायं, पर सब का ताश एकही होवे।

(७) जिस ताश के लिये आप मना कर दें वही ताश देखने वाला खींचे।

और भी अनेक खेल इसी तरह बना लीजिये।

## पहेली के खेल

(यह पहेली पहिले भाग के पच्चीसवें खेल में लिखी है)

(१) यदि कोई मनुष्य किसी ताश का नाम लेवे तो यह बतला दिया जाय कि वह किस गिनती पर है। कुछ ताशों की गिनती याद भी रखनी चाहिये, तो सुभीता होगा। जैसे बादशाह की गिनती २, १३+२, और २६+२, ३९+२, मेम की गिनती ६, १३+६, २६+६ और ३९+६, गुलाम की गिनती १३, २६, ३९, और ५२, बस आगे सहज है।

(२) ताशों को हाथ से टटोल कर बतलाना ।

(३) गड्डी उलट फर टेबुल पर रख देना और ताश का नाम कह कह के दिखाते जाना ।

(४) एक हाथ से दूसरे हाथ में ताशों को सरकाते जाना । जब कोई रोक दे तो उस ताश का नाम बतला देना—इसमें ताशों को सरकाते समय गिनते जाना चाहिये । फिर सहज है ।

(५) यदि कोई मनुष्य कोई गिनती ५२ के अन्दर कहे तो उस गिनती पर कौन सा ताश है बता देना ।

(६) बावन ताश उलटे करके बिछा दिये जायं, यदि कोई किसी ताश को हाथ लगा दे तो उसका नाम बतला देना । पहेली के क्रम से बिछाना चाहिये ।

(७) बावन उलटे बिछे हुये ताशों में जिस ताश का कोई नाम ले उसे निकाल दिखाना ।

(८) गड्डी में से जब कोई मनुष्य थोड़े बहुत ताश उठा लेवें तो उन सभों को हाथ पर वजन करके गिनती बतला देना। उठाये हुवे ताश हाथ में लेकर सफाई से नीचे वाला ताश देख लीजिये और तब पहेली के द्वारा गिनती बतला दीजिये।

(९) कुछ ताश एक क़तार में सीधे बिछा दिये जायं। जब पांच सात मनुष्य एक एक ताश पहिचान लेवें और आरम्भ से उनकी गिनती याद रक्खें तो सब ताशों को फेंटकर गिनती पूछ पूछ पहिचाने हुये ताश को निकाल देना।

(१०) यदि कोई मनुष्य गड्डी में से १२ या १५ ताश निकाल ले तो उसके हाथ वाले सब ताशों का नाम बतला देना। गड्डी में से जहां से ताश निकाला गया हो उसके ऊपर वाला ताश सफाई से देख लीजिये और फिर बराबर कह चलिये।

(११) कई आदमियों को ताश खिंचवा कर

गड्डी में मिला देना और उसे खूब फेंट डालना। फिर एक एक आदमी के के ताश का नाम और जिस जगह अर्थात् गिनती पर वह होवे बतलाते जाना। जब गड्डी फेंट दी जाय तो बेपरवाही से हाथ टेबुल के नीचे ले जाइये और उसी रंग की गड्डी जो वहां पहेली के अनुसार लगा कर रक्खी हो दराज में से उठा लीजिये और खेल कर डालिये।

(१२) पीठ के पीछे हाथ ले जाकर बिना देखे ताशों का नाम बतलाते जाना।

कहां तक लिखें, योंहीं कई एक पचीसी या पचासे बना डालिये पर ये कोई खेल नहीं हैं। खेल उसी का नाम है कि जिसे देखते ही तबीयत खुश हो जाय।

## अन्त में—

अब हम अपने पाठकों को कुछ विशेष बातें समझा देते हैं जिसमें उन्हें पूर्वलिखित खेलों में बड़ी सहायता मिलेगी। चाहे सहज से सहज भी

खेल हो उसे पहिले ध्यानपूर्वक पढ़ जाइये और जो तर्कीबें लिखी हैं उन्हीं के अनुसार करते चलिये। यदि उसमें कोई हाथ की सफाई का काम है तो पहिले उसे खूब मांज लीजिये, जिसमें खेल करती समय कोई दिक्कत न पड़े। बस जब यों खेल आ गया तो दस बीस दफे के करने से तो बहुतही सहज मालूम होने लगेगा। इतना ही नहीं, स्मरण रखिये कि जब आप कोई खेल करने लगिये तो उस समय इस प्रकार आचरण और बोलचाल रखिये कि मानो आप में कोई दैवी शक्ति है। जिस प्रकार नाटक करने के समय नाटककर्त्ता लोग अपने सब आचरण ठीक वैसेही रखते हैं जिसकी वे नकल उतारते हैं, इसी प्रकार आपको भी तमाशा करने के समय जादू का मूर्तिमान अवतार हो जाना चाहिये और अपनी जादू की छड़ी को केवल छड़ी मात्र न समझना चाहिये किन्तु उसके एक एक अंग में जादू भरा हुआ जानना चाहिये। जब कोई आश्चर्ययुक्त

खेल करना हो तो ताश को जादू की छड़ी से छू देना चाहिये जिससे लोगों को यह विश्वास हो जाय कि जो कुछ काम होता है जादू की छड़ी ही के द्वारा होता है।

प्रत्येक खेल के लिये बँधी हुई बातें करनी चाहियें, यही तो मानो खेल की जान है। इससे कितना अधिक लाभ होता है यह अपने पाठकों को पहिलेही दिखा चुके हैं।

खेलों का क्रम यों होना चाहिये कि पहिले से बढ़ कर दूसरा और दूसरे से बढ़ के तीसरा, योंही अन्तवाला खेल सब से उत्तम हो कि जिसमें दर्शकों की उत्सुकता बराबर बढ़ती ही जाय।

और भी दो चार बातें हैं जो कि यहां अपने पाठकों को स्मरण रखने के लिये लिख देते हैं।

( १ ) चित्त में उद्वेग मत होने दीजिये और खेल करती समय कदापि मत घबड़ाइये।

( २ ) धीरे धीरे काम करिये। खेल करती समय जो कुछ आपको कहना हो धीरे धीरे

कहिये, जैसे कि नाटककर्त्ता अपनी अपनी बातें कह जाते हैं, न कि जैसे स्कूल के लड़के, पाठशाला में सबक सुनाते हैं। जब एक खेल समाप्त हो जाय तो दो तीन मिनिट का अन्तर दे के दूसरा खेल आरम्भ करिये।

(३) जानबूझ के दिल्लगी मत करिये। यदि आप स्वभावतः हंसमुख हों तो कुछ चिन्ता नहीं। नहीं तो जानबूझ कर हंसी करना खेल को और बिगाड़ देता है।

(४) किसी विशेष मनुष्य पर कटाक्ष मत करिये। प्रायः ऐसा होता है कि एकाद ऐसे लोग भी निकल आते हैं जो हर बात में खुचुर किया करते हैं, यदि ऐसे लोगों को किसी प्रकार बेव-कूफ बना सकिये तो कभी मत चूकिये।

(५) यदि खेल बिगड़ जाय तो हिम्मत मत हारिये। झट दूसरी तरकीब लगा कर खेल को दूसरी रीति से कर डालिये। यदि दुर्भाग्यवश बिलकुल बिगड़ जाय तो प्रसन्नतापूर्वक हंस कर

कह दें कि आज चन्द्रमा अच्छे नहीं हैं और पांच सात नक्षत्र तथा ग्रहों के नाम गिन गिना कर ऐसी विचित्र बात कह दीजिये कि लोग हंस पड़ें।

इतनी बातें तो हमने लिख दीं। अब पाठक लोग और भी बहुत सी बातें अपने मन से बना लें।

हमें आशा है ऊपर लिखे खेलों से पाठकों का कुछ मनोरंजन होगा। यदि ऐसा हुआ तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सफल हुआ।

॥ इति ॥

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri

CC-0. Swami Atmanand Giri (Prabhuji) Veda Nidhi Varanasi. Digitzed by eGangotri